नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

# नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 282
दि. 15.07.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा


# ‘दो बच्चों की शर्त’ पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, पंचायत चुनावों में अयोग्यता के नियम की संवैधानिक वैधता पर उठे सवाल

नई दिल्ली/मुंबई। पंचायत चुनावों में जनसंख्या नियंत्रण के उद्देश्य से लागू किए गए ‘दो बच्चों के नियम’ की संवैधानिक वैधता अब सर्वोच्च न्यायालय की कसौटी पर है। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार की इस नीति पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि देश की मौजूदा जनसांख्यिकीय परिस्थितियों में यह प्रावधान अब अपनी प्रासंगिकता खोता हुआ दिखाई देता है। अदालत ने स्पष्ट टिप्पणी की कि जब देश की प्रजनन दर लगातार घट रही है और कई राज्यों में यह विकसित देशों के स्तर से भी नीचे पहुंच चुकी है, तब केवल दो से अधिक बच्चों के आधार पर किसी व्यक्ति को लोकतांत्रिक चुनाव लड़ने से वंचित करना संवैधानिक सिद्धांतों की कसौटी पर पुनः परखा जाना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट की इस टिप्पणी ने केवल महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि उन सभी राज्यों में लागू समान कानूनों को लेकर भी नई बहस छेड़ दी है, जहां स्थानीय निकाय चुनावों में दो से अधिक बच्चों वाले उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित करने का प्रावधान है। अदालत ने संकेत दिया कि बदलते सामाजिक, आर्थिक और जनसंख्या संबंधी आंकड़ों के बीच ऐसे कानूनों की आवश्यकता और औचित्य का नए सिरे से परीक्षण होना चाहिए।

यह महत्वपूर्ण टिप्पणी न्यायमूर्ति पी.एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आलोक अराधे की पीठ ने महाराष्ट्र की पूर्व सरपंच मंगला भीमराव इंगले की याचिका पर सुनवाई के दौरान की। मंगला इंगले को तीसरा बच्चा होने के कारण महाराष्ट्र ग्राम पंचायत अधिनियम के तहत सरपंच पद के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया था। उनके खिलाफ स्थानीय स्तर पर शिकायत दर्ज कराई गई थी, जिसके बाद बुलढाणा के अतिरिक्त कलेक्टर ने अक्टूबर 2024 में उन्हें पद के लिए अयोग्य ठहरा दिया। इसके बाद अमरावती संभाग के अतिरिक्त आयुक्त और फिर बॉम्बे हाई कोर्ट ने भी प्रशासनिक निर्णय को सही माना। इन आदेशों को चुनौती देते हुए मंगला

इंगले ने सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने केवल याचिकाकर्ता के मामले तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि पूरे कानून की संवैधानिक वैधता पर व्यापक प्रश्न खड़े किए। न्यायमूर्ति पी.एस. नरसिम्हा ने कहा कि भारत की कुल प्रजनन दर (टोटल फर्टिलिटी रेट) अब लगभग 1.7 तक पहुंच चुकी है, जो प्रतिस्थापन स्तर (Replacement Level) से भी नीचे है। कई राज्यों में यह दर विकसित देशों के बराबर या उससे भी कम हो चुकी है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या नियंत्रण के उद्देश्य से दशकों पहले बनाई गई नीतियों को वर्तमान परिस्थितियों में उसी रूप में लागू रखना उचित नहीं माना जा सकता।

पीठ ने यह भी कहा कि यदि किसी नीति का मूल उद्देश्य ही समय के साथ अप्रासंगिक हो गया हो, तो उसकी संवैधानिक वैधता पर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है। अदालत ने टिप्पणी की कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव लड़ना केवल एक व्यक्तिगत अधिकार का प्रश्न नहीं, बल्कि नागरिकों के प्रतिनिधित्व और समान अवसर के सिद्धांत से भी जुड़ा विषय है। इसलिए केवल पारिवारिक स्थिति के आधार पर किसी व्यक्ति को चुनावी प्रक्रिया से बाहर करना गंभीर संवैधानिक प्रश्न उत्पन्न करता है।

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2003 के चर्चित ‘जावेद बनाम हरियाणा राज्य’ फैसले का भी उल्लेख किया, जिसमें स्थानीय निकाय चुनावों में दो बच्चों से अधिक होने पर अयोग्यता के प्रावधान को वैध माना गया था। अदालत ने संकेत दिया कि बदलती परिस्थितियों को देखते हुए उस निर्णय पर भी पुनर्विचार की आवश्यकता हो सकती है। यदि ऐसा होता है, तो यह स्थानीय निकाय चुनावों से जुड़े कानूनों की दिशा बदलने वाला महत्वपूर्ण घटनाक्रम साबित हो सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने इस दौरान महाराष्ट्र सरकार से यह भी जानकारी मांगी कि देश के किन-किन राज्यों में स्थानीय निकाय चुनावों के लिए दो बच्चों की शर्त अब भी लागू है और वहां इस कानून की वर्तमान स्थिति क्या है। अदालत यह भी जानना चाहती है कि क्या इन राज्यों ने बदलती जनसंख्या प्रवृत्तियों के मद्देनजर अपनी नीतियों में कोई संशोधन किया है।

मामले की सुनवाई में सहायता के लिए महाराष्ट्र सरकार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता रुक्मिणी बोबडे को न्यायमित्र (Amicus Curiae) नियुक्त किया गया है। अदालत ने उनसे विभिन्न राज्यों के कानूनों, जनसंख्या संबंधी नवीनतम आंकड़ों और पूर्व न्यायिक निर्णयों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करने को कहा है, ताकि इस महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न पर व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि सर्वोच्च न्यायालय अंततः इस कानून को असंवैधानिक घोषित करता है या पुराने फैसले पर पुनर्विचार करता है, तो इसका प्रभाव केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहेगा। देश के कई राज्यों में पंचायत, नगर परिषद और अन्य स्थानीय निकायों के चुनावों में लागू ऐसे प्रावधान स्वतः न्यायिक समीक्षा के दायरे में आ सकते हैं। इससे हजारों संभावित जनप्रतिनिधियों के चुनाव लड़ने के अधिकार पर भी असर पड़ सकता है।

संविधान विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला केवल जनसंख्या नियंत्रण नीति का नहीं, बल्कि समानता के अधिकार, लोकतांत्रिक भागीदारी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मूल संवैधानिक सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है। वहीं जनसंख्या विशेषज्ञों का तर्क है कि भारत में जन्मदर पहले ही तेजी से घट रही है और कई राज्यों में भविष्य में वृद्ध होती आबादी तथा श्रमबल में कमी जैसी चुनौतियां सामने आ सकती हैं। ऐसे में पुराने जनसंख्या नियंत्रण कानूनों की उपयोगिता पर पुनर्विचार स्वाभाविक है।

दूसरी ओर, कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि जब यह कानून बनाया गया था, तब देश में तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक बड़ी चुनौती थी और उसी पृष्ठभूमि में इसे लागू किया गया था। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में सामाजिक और जनसांख्यिकीय बदलावों को देखते हुए सरकारों को अपनी नीतियों का समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 28 जुलाई को निर्धारित की है। अब सभी की नजर इस बात पर टिकी है कि सर्वोच्च न्यायालय इस महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न पर क्या अंतिम रुख अपनाता है। यदि अदालत दो बच्चों के नियम की वैधता पर पुनर्विचार का रास्ता खोलती है, तो यह स्थानीय निकाय चुनावों से जुड़े कानूनों और जनसंख्या नीति—दोनों के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हो सकता है।

## होर्मुज में भारतीय नाविक की मौत से बढ़ा तनाव, ईरान के खिलाफ भारत का कड़ा विरोध; समुद्री सुरक्षा पर उठे गंभीर सवाल

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते सैन्य तनाव का असर अब सीधे भारत के नागरिकों और सामरिक हितों पर दिखाई देने लगा है। होर्मुज जलडमरूमध्य के निकट संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दो वाणिज्यिक तेल टैंकरों पर हुए हमले में एक भारतीय क्रू सदस्य की मौत और कई अन्य भारतीयों के घायल होने के बाद भारत सरकार ने कड़ा कूटनीतिक रुख अपनाया है। विदेश मंत्रालय ने नई दिल्ली स्थित ईरानी दूतावास के उप प्रमुख मोहम्मद जावेद होसैनी को तलब कर घटना पर गहरी नाराजगी जताई और भविष्य में भारतीय नागरिकों तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की।

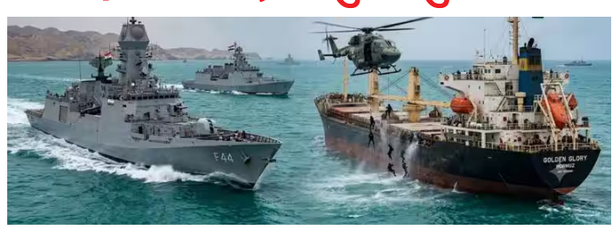

विदेश मंत्रालय के अनुसार हमला होर्मुज जलडमरूमध्य के निकट यूएई के दो वाणिज्यिक तेल टैंकरों पर हुआ, जिन पर कुल 30 भारतीय क्रू सदस्य तैनात थे। एक पोत पर 12 और दूसरे पर 18 भारतीय नाविक मौजूद थे। हमले में एक भारतीय नाविक की मृत्यु हो गई, जबकि कुल आठ क्रू सदस्य घायल हुए हैं। घायलों में छह भारतीय शामिल हैं और इनमें दो भारतीयों की हालत गंभीर बताई गई है। सभी घायलों का उपचार कराया जा रहा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत ने इस हमले को लेकर ईरान के समक्ष औपचारिक विरोध दर्ज कराया है। सरकार ने स्पष्ट किया कि अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों पर चल रहे वाणिज्यिक जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करना अंतरराष्ट्रीय दायित्व है और इस प्रकार के हमले किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं हैं। भारत ने ईरान से भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने का आग्रह किया है।

यह घटना ऐसे समय हुई है जब पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष लगातार व्यापक होता जा रहा है। होर्मुज जलडमरूमध्य विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है, जहां से वैश्विक कच्चे तेल का बड़ा हिस्सा गुजरता है। इस क्षेत्र में बढ़ते हमलों ने न केवल अंतरराष्ट्रीय नौवहन कंपनियों की चिंता बढ़ाई है, बल्कि ऊर्जा आपूर्ति और वैश्विक तेल बाजार पर भी दबाव बढ़ा दिया है। हमले के बाद कच्चे तेल की कीमतों में तेजी दर्ज की गई और कई शिपिंग कंपनियों ने क्षेत्र में परिचालन को लेकर सतर्कता बढ़ा दी है।

भारत के लिए यह मामला केवल एक कूटनीतिक विरोध तक सीमित नहीं है। देश अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से आयात करता है और होर्मुज जलडमरूमध्य भारतीय ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख समुद्री मार्ग है। ऐसे में क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ने से न केवल तेल आयात प्रभावित हो सकता है, बल्कि माल ढुलाई, बीमा लागत और परिवहन खर्च में भी वृद्धि की आशंका है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार पश्चिम एशिया में संघर्ष शुरू होने के बाद से वाणिज्यिक जहाजों पर हुए विभिन्न हमलों में अब तक 13 भारतीय नाविकों की मौत हो चुकी है। इसके अलावा तीन भारतीय अब भी लापता बताए जा रहे हैं, जबकि दो दर्जन से अधिक भारतीय घायल हुए हैं। अधिकांश मामलों में निशाना विदेशी ध्वज वाले जहाज बने, लेकिन उनमें भारतीय चालक दल बड़ी संख्या में कार्यरत था।

समुद्री क्षेत्र के जानकारों के अनुसार दुनिया के विभिन्न वाणिज्यिक जहाजों पर बड़ी संख्या में भारतीय नाविक कार्यरत हैं। अनुमान है कि इस समय लगभग 3.25 लाख भारतीय विभिन्न अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक पोतों पर सेवाएं दे रहे हैं, जिनमें हजारों नाविक पश्चिम एशिया और संघर्ष प्रभावित समुद्री क्षेत्रों में तैनात हैं। इसलिए क्षेत्र में बढ़ता सैन्य तनाव भारत के लिए केवल विदेश नीति का विषय नहीं, बल्कि अपने नागरिकों की सुरक्षा से जुड़ा गंभीर मानवीय मुद्दा भी बन गया है। कूटनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि भारत ने इस मामले में संतुलित लेकिन सख्त रुख अपनाया है। एक ओर उसने ईरान के समक्ष औपचारिक विरोध दर्ज कराया है, वहीं दूसरी ओर क्षेत्र में तनाव कम करने और अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों की सुरक्षा बनाए रखने की आवश्यकता पर भी जोर दिया है। भारत लगातार यह रुख दोहराता रहा है कि समुद्री व्यापार मार्गों की निर्बाध सुरक्षा वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## समय रैना पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, आदेशों की अनदेखी पर लगाई फटकार; 3 लाख रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली। कॉमेडियन और यूट्यूबर समय रैना से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा रुख अपनाते हुए उन्हें न्यायालय के आदेशों का पालन न करने पर फटकार लगाई है। अदालत ने टिप्पणी की कि न्यायालय के समक्ष दिए गए आश्वासनों का पालन नहीं किया गया और इससे ऐसा प्रतीत होता है कि अदालत को गंभीरता से नहीं लिया गया। शीर्ष अदालत ने समय रैना समेत रणवीर अल्लाहबादिया और अन्य संबंधित पक्षों पर तीन-तीन लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया तथा चेतावनी दी कि निर्धारित समय में आदेश का पालन नहीं होने पर और कठोर कार्रवाई की जा सकती है। मामले की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने सार्वजनिक जीवन में प्रभाव रखने वाले डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स की जिम्मेदारी पर भी गंभीर टिप्पणी की। पीठ ने कहा कि जो लोग स्वयं को युवाओं का प्रेरणास्रोत या “यूथ आइकॉन” मानते हैं, उन्हें समाज और न्यायपालिका के प्रति अधिक जिम्मेदार आचरण करना चाहिए। अदालत ने कहा कि समय रैना के आचरण से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने न्यायालय के समक्ष किए गए वादों का पालन नहीं किया और अदालत को “हल्के में लिया”। यह मामला ‘इंडियाज़ गॉट लेटेंट’ कार्यक्रम के दौरान दिव्यांगजनों को लेकर की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणियों से जुड़ा है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने समय रैना और अन्य कंटेंट क्रिएटर्स द्वारा दिए गए आश्वासनों को स्वीकार करते हुए निर्देश दिया था कि वे दिव्यांगजनों की उपलब्धियों को सामने लाने वाले विशेष कार्यक्रम आयोजित करेंगे और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के प्रयास करेंगे।

अदालत का उद्देश्य केवल दंड देना नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता और सकारात्मक संदेश को बढ़ावा देना था।

सुनवाई के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने अदालत को बताया कि न्यायालय के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद समय रैना ने न तो क्योर एसएमए फाउंडेशन से समुचित संपर्क किया और न ही उन गतिविधियों को अपेक्षित रूप से पूरा किया, जिनका आश्वासन अदालत को दिया गया था। उनका कहना था कि कार्यक्रम तो आयोजित किए जा रहे हैं, लेकिन न्यायालय के आदेशों के अनुरूप दिव्यांगजनों के हित में आवश्यक पहल नहीं की गई। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि अदालत के समक्ष दिया गया आश्वासन केवल औपचारिकता नहीं होता, बल्कि उसका पालन करना प्रत्येक पक्ष की कानूनी जिम्मेदारी है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति अदालत को दिए गए वचन का सम्मान नहीं करता, तो यह न्यायिक प्रक्रिया की अवमानना के समान गंभीर विषय बन जाता है।

सुप्रीम कोर्ट ने समय रैना, रणवीर अल्लाहबादिया और अन्य संबंधित पक्षों को दो सप्ताह के भीतर जुर्माने की राशि जमा करने तथा आदेशों के अनुपालन से संबंधित जानकारी प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि भविष्य में भी आदेशों की अनदेखी जारी रही, तो और अधिक कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यह मामला केवल एक कॉमेडी शो या सोशल मीडिया कंटेंट तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सार्वजनिक मंचों पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ सामाजिक जिम्मेदारी और न्यायालय के आदेशों के सम्मान का भी महत्वपूर्ण उदाहरण बन गया है।

## 19 साल बाद कोलकाता में तस्लीमा नसरीन की वापसी अभिव्यक्ति की आजादी पर फिर होगी राष्ट्रीय बहस

कोलकाता। लगभग दो दशक पहले धार्मिक कट्टरता और हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बीच कोलकाता छोड़ने को मजबूर हुईं बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन अब 19 वर्षों बाद एक बार फिर उसी शहर में कदम रखने जा रही हैं। उनकी वापसी केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं मानी जा रही, बल्कि इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, राजनीतिक बदलाव और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ी बड़ी घटना के रूप में देखा जा रहा है। पश्चिम बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद पहली बार तस्लीमा नसरीन की सार्वजनिक उपस्थिति को लेकर राजनीतिक और साहित्यिक हलकों में व्यापक चर्चा शुरू हो गई है। तस्लीमा नसरीन ने स्वयं सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी दी है कि वह 1 अगस्त को कोलकाता के प्रतिष्ठित रवींद्र सदन में आयोजित एक विशेष ‘कट्टरता विरोधी साहित्यिक कार्यक्रम’ में भाग लेंगी। इस अवसर पर वह अपनी कविताओं का पाठ भी करेंगी और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मानवाधिकार तथा समाज में बढ़ती असहिष्णुता जैसे विषयों पर अपने विचार रखेंगी। कार्यक्रम का आयोजन कई धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक संगठनों द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है।

तस्लीमा नसरीन का नाम दक्षिण एशिया की उन लेखिकाओं में शामिल है जिन्होंने महिलाओं के अधिकार, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक रूढ़ियों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे विषयों पर खुलकर लिखा। उनके लेखन को दुनिया भर में सराहना भी मिली और तीखा विरोध भी झेलना पड़ा। विशेष रूप से उनकी चर्चित पुस्तक ‘लज्जा’ ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई, लेकिन इसी के बाद उन्हें लगातार धमकियों और विरोध का सामना करना पड़ा।

वर्ष 2007 में कोलकाता में उनके खिलाफ व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए थे। उस समय शहर के कई हिस्सों में हिंसा भड़क गई थी और कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने के बाद तत्कालीन राज्य सरकार ने उन्हें शहर छोड़ने की सलाह दी थी। इसके बाद तस्लीमा को पहले जयपुर, फिर दिल्ली और बाद में विदेश में रहना पड़ा। तब से लेकर अब तक वह कोलकाता लौटने की इच्छा कई बार सार्वजनिक रूप से व्यक्त करती रही थीं। इस बार उनकी वापसी ऐसे समय हो रही है जब पश्चिम बंगाल की राजनीतिक परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी हैं। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद इस आयोजन को राजनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। सरकार से जुड़े नेताओं का कहना है कि लोकतंत्र में किसी भी लेखक या बुद्धिजीवी को अपने विचार रखने का पूरा अधिकार है और विचारों का जवाब हिंसा से नहीं बल्कि संवाद से दिया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के आयोजकों का कहना है कि यह आयोजन किसी राजनीतिक दल का कार्यक्रम नहीं बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ सामाजिक संदेश देने का प्रयास है। आयोजक मोहित रॉय के अनुसार, तस्लीमा नसरीन की वापसी केवल एक व्यक्ति की वापसी नहीं बल्कि उन मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रतीक है जिनमें विचारों की स्वतंत्रता सर्वोपरि मानी जाती है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2007 में जो परिस्थितियां बनी थीं, वे लोकतांत्रिक समाज के लिए दुर्भाग्यपूर्ण थीं और अब समय बदल चुका है।

बताया जा रहा है कि इस कार्यक्रम में राज्य सरकार के कई वरिष्ठ प्रतिनिधि भी शामिल हो सकते हैं। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के भी कार्यक्रम में उपस्थित रहने की संभावना जताई गई है। हालांकि सरकार की ओर से अभी तक औपचारिक कार्यक्रम सूची जारी नहीं की गई है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि तस्लीमा नसरीन की वापसी केवल साहित्यिक महत्व की घटना नहीं है। यह आने वाले समय में पश्चिम बंगाल की राजनीति में भी बड़ा प्रतीकात्मक संदेश दे सकती है। भाजपा इस आयोजन को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक कट्टरता के विरोध के रूप में प्रस्तुत कर रही है, जबकि विपक्ष इसे राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास बता सकता है। ऐसे में कार्यक्रम के राजनीतिक मायने भी व्यापक रूप से चर्चा में हैं। तस्लीमा नसरीन लंबे समय से निर्वासन का जीवन जी रही हैं। उन्होंने अनेक बार कहा है कि कोलकाता उनके सबसे प्रिय शहरों में से एक रहा है और वह स्वयं को इस शहर की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ महसूस करती हैं। उन्होंने कई साक्षात्कारों में यह भी कहा कि बंगाली भाषा और संस्कृति से उनका गहरा भावनात्मक रिश्ता है, इसलिए कोलकाता लौटना उनके लिए केवल एक यात्रा नहीं बल्कि भावनात्मक वापसी भी है। साहित्य जगत के अनेक वरिष्ठ लेखकों और बुद्धिजीवियों ने भी उनकी वापसी का स्वागत किया है। उनका मानना है कि किसी भी लोकतांत्रिक समाज में लेखक को अपने विचार रखने का अधिकार होना चाहिए, चाहे लोग उनसे सहमत हों या असहमत। वहीं कुछ सामाजिक संगठनों ने यह भी कहा है कि किसी भी प्रकार के विवाद से बचते हुए कार्यक्रम को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराया जाना चाहिए।

सुरक्षा एजेंसियां भी कार्यक्रम को लेकर पूरी तरह सतर्क हैं। पिछले अनुभवों को देखते हुए प्रशासन द्वारा कार्यक्रम स्थल और आसपास के क्षेत्रों में विशेष सुरक्षा व्यवस्था किए जाने की संभावना है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखना सर्वोच्च प्राथमिकता होगी और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे।

इस बीच आयोजकों से जब यह पूछा गया कि क्या तस्लीमा नसरीन अब स्थायी रूप से कोलकाता में रहेंगी, तो उन्होंने स्पष्ट किया कि फिलहाल ऐसा कोई निर्णय नहीं हुआ है। उनका यह दौरा फिलहाल केवल साहित्यिक कार्यक्रम तक सीमित है और भविष्य की किसी स्थायी योजना पर अभी चर्चा नहीं हुई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि तस्लीमा नसरीन की वापसी केवल एक लेखिका की घर वापसी नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, असहमति के अधिकार और सामाजिक सहिष्णुता पर एक नई बहस की शुरुआत भी हो सकती है। लगभग 19 वर्षों बाद उनकी मौजूदगी एक बार फिर साहित्य, राजनीति और समाज के बीच उस संवाद को जीवंत करेगी, जिसकी आवश्यकता आज पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है।


नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

## संपादकीय

### महंगाई की मिसाइल और जनता का बंकर

आजकल दुनिया में दो चीज़ों का कोई भरोसा नहीं रहा—एक नेताओं के बयान और दूसरा पेट्रोल के दाम। सुबह कोई देश शांति की बात करता है, शाम तक मिसाइलें चलने लगती हैं। उधर टीवी चैनल "ब्रेकिंग न्यूज़" चलाते हैं और इधर पेट्रोल पंप वाले नई कीमतों का बोर्ड टांग देते हैं। ऐसा लगता है कि अंतरराष्ट्रीय तनाव का सबसे तेज़ असर किसी सेना पर नहीं, बल्कि आम आदमी की जेब पर पड़ता है। वैसे युद्ध भी अब पुराने जमाने जैसा नहीं रहा। पहले सेनाएं लड़ती थीं, अब अर्थव्यवस्थाएं लड़ती हैं। एक देश हमला करता है, दूसरा जवाब देता है और तीसरा देश तेल बेचकर मुस्कुरा देता है। सबसे ज्यादा परेशान वह इंसान होता है जिसने सुबह सिर्फ ऑफिस जाने के लिए अपनी बाइक स्टार्ट की थी। उसे नहीं पता कि उसने कौन-सी सीमा पार कर ली, जिसकी सजा उसे पेट्रोल भरवाते समय मिल रही है।

पेट्रोल की कीमतें अब ऐसी हो गई हैं जैसे किसी फिल्म का सुपरस्टार—हर दिन सुर्खियों में। फर्क सिर्फ इतना है कि सुपरस्टार कभी-कभी नीचे भी आ जाता है, लेकिन पेट्रोल के दामों को नीचे आने में शायद शर्म आती है। जनता भी अब पूछना छोड़ चुकी है कि दाम कब कम होंगे। अब तो लोग सिर्फ इतना पूछते हैं—"आज कितना बढ़ा?" सरकारें भी कमाल की होती हैं। जब दाम बढ़ते हैं तो कारण पूरी दुनिया होती है और जब दाम थोड़ा कम होते हैं तो उपलब्धि पूरी अपनी होती है। जनता बीच में बैठी सोचती रहती है कि आखिर उसका रोल इस फिल्म में क्या है? जवाब मिलता है—टिकट खरीदने वाला दर्शक। उधर बारिश भी इस बार किसी वीआईपी मेहमान की तरह व्यवहार कर रही है। जहां बुलाया नहीं, वहां घंटों बैठी रहती है और जहां किसान हाथ जोड़कर इंतजार कर रहा है, वहां आने का नाम नहीं लेती। शहरों में पानी इतना भर जाता है कि सड़कें खुद सोचने लगती हैं कि हम सड़क हैं या नदी। नगर निगम हर साल दावा करता है कि इस बार पूरी तैयारी है। फिर पहली बारिश आती है और सारी तैयारी पानी में तैरती हुई दिखाई देती है। लोग गड्ढों से बचते-बचाते ऑफिस पहुंचते हैं। कई बार तो गड्ढा इतना गहरा होता है कि उसमें गिरकर आदमी अपनी पुरानी यादें भी ढूंढ़ सकता है। स्मार्ट सिटी का सपना भी बड़ा दिलचस्प है। शहर में जहां देखो, वहीं बैरिकेड, खुदाई और "असुविधा के लिए खेद है" का बोर्ड लगा मिलता है। ऐसा लगता है कि इस देश में सबसे स्थायी चीज़ यही बोर्ड है। सड़क कब बनेगी, किसी को नहीं पता; लेकिन खेद हमेशा समय पर मिल जाता है।

सोने की कीमतों ने भी लोगों के सपनों का वजन बढ़ा दिया है। पहले लोग शादी में सोना खरीदने की योजना बनाते थे, अब बैंक लोन की योजना बनाते हैं। सुनार भी ग्राहक को देखकर पहले पानी पिलाता है, फिर रेट बताता है, ताकि कहीं कीमत सुनकर ग्राहक बेहोश न हो जाए।

शेयर बाजार भी किसी रहस्य उपन्यास से कम नहीं। बुरी खबर आए तो तेजी, अच्छी खबर आए तो गिरावट। आम आदमी सोचता है कि आखिर यह गणित किस स्कूल में पढ़ाई जाती है। निवेशक कहते हैं—"यही मार्केट है।" यानी यहां लॉजिक नहीं, सिर्फ धैर्य काम आता है।

खेलों की दुनिया में भी भारत का जवाब नहीं। हमारी टीम हर टूर्नामेंट में नहीं पहुंचती, लेकिन हमारे दर्शक हर जगह पहुंच जाते हैं। क्रिकेट हो, फुटबॉल हो, टेनिस हो या फिर मोहल्ले की गली में दो बच्चों का मैच—भारतीय दर्शक पूरी गंभीरता से विश्लेषण करेंगे। अगर देखने का कोई विश्व कप हो जाए, तो उसमें भारत कई दशक तक अपराजित रहेगा। आखिर में आम आदमी वही करता है जो सदियों से करता आया है। सुबह महंगाई को कोसता है, दोपहर में ट्रैफिक से जूझता है, शाम को पेट्रोल भरवाकर बजट बिगाड़ता है और रात को टीवी पर विशेषज्ञों की बहस देखकर सो जाता है। अगले दिन फिर वही चक्र शुरू हो जाता है। दुनिया चाहे जितनी बदल जाए, एक बात तय है—युद्ध का अंत कभी न कभी हो जाता है, चुनाव भी खत्म हो जाते हैं, बयान भी बदल जाते हैं, लेकिन महंगाई का अभियान हमेशा जारी रहता है। शायद इसी का नाम आधुनिक विकास है, जहां सबसे तेज़ दौड़ हमेशा कीमतें ही लगाती हैं और जनता उन्हें दूर से भागते हुए देखती रह जाती है।

# बदलाव के दौर में नई शुरुआत की जरूरत

> " हमें 'मैनहट्टन प्रोजेक्ट' जैसा एक प्रोजेक्ट शुरू करने की ज़रूरत है, जिसमें हम विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, वित्तीय मदद और प्रशासनिक क्षेत्रों के अपने सबसे बेहतरीन लोगों को एक साथ एक ही जगह पर ला सकें। इसके नतीजे तेज़ी से मिलेंगे और यह एक खेल बदलने वाला साबित होगा।

हर सुबह मैं हमारे राष्ट्रीय अख़बारों की मुख्य खबरों के शीर्षक पंक्तियां देखता, मोबाइल फ़ोन पर खबरें स्क्रॉल करता हूं, यहां तक कि टीवी पर भी नज़र डालता हूं... यह सब किसी अच्छी ख़बर की तलाश में, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं होता। एआई के दौर की शुरुआत के साथ दुनिया तेज़ी से आगे बढ़ रही है। अमेरिका, चीन, ताइवान, कोरिया इत्यादि देशों की कंपनियां, संस्थान और लोग नई और रोमांचक तकनीकें, जैसे कि क्वांटम कंप्यूटिंग, रोबोटिक्स, क्लीन एनर्जी और एआई की सोचने-समझने और चेतना विकसित करने की क्षमता करने के बारे में बात कर रहे हैं। मस्क और उनकी कंपनी मंगल ग्रह तक पहुंचने, अंतरिक्ष यात्रा और अंतरिक्ष कक्षा में डेटा सेंटर स्थापित करने की बात कर रहे हैं...

जब मैं यह लेख लिख रहा हूं, तब भी इंसानी क्षमता और कल्पना को नई उड़ान मिल रही है। लेकिन, यहां अपने देश में हम क्या देखते हैं, राष्ट्रीय विचार किस बारे में हैं? राजनीतिक और धार्मिक झगड़ों की खबरें, राजनीति में दखलअंदाजी करते विभिन्न धार्मिक संस्थाओं द्वारा जारी फतवों की खबरें। अनेक धार्मिक स्थलों पर हुई चंदा या चढ़ावे की चोरी की जांच की खबरें। यह महत्वपूर्ण पूजा-स्थलों को लेकर हैं। फिर स्थानीय धर्मगुरुओं द्वारा चलाए जा रहे हज़ारों 'डेरे' हैं, और यहां भी मामला भारी-भरकम दान-चढ़ावे का है। धीरे-धीरे राजनीति और धर्म के बीच की रेखा मिटती गई और आज वे गलबहियां डाले चल रहे हैं।

इस अफरातफरी में अगर कोई बंदा तर्क, कोई तथ्य, कोई दिशा तलाशना चाहे... कुछ ऐसा जो राष्ट्रीय हित को आगे बढ़ाने वाला हो। कोई स्पष्ट राजनीतिक या आर्थिक विचारों को ढूंढ़ता है- चाहे वे दक्षिणपंथी हो, मध्यमार्गी हो, वामपंथी, समाजवादी या कम्युनिस्ट हो;



लेकिन सब बेकार, हर चीज़ पर बस धर्म के अलग-अलग रंग छाए हुए हैं। अख़बार पढ़ने की सुबह की दिनचर्या के वक्त टी.एस. एलियट की मशहूर कविता 'वेस्टलैंड' की यह पंक्तियां बेसाख्ता याद आ जाती हैं—'यहां पानी नहीं, बस चट्टान है; चट्टान है, पानी नदारद और रेतीली सड़क...।'

आम आदमी कहां है, जिसके नाम पर यह सब किया जाता है? वह तो 'बलि का बकरा' है, लेकिन 'बलि का बकरा' असल में क्या चाहता है? क्या वह इन अंधेरी गलियों में चलना ही चाहता है- नहीं, उसे रोज़गार चाहिए, उसे अपने परिवार के लिए दो वक़्त की रोटी चाहिए, उसे मौसम की मार से बचने के लिए सिर पर छत चाहिए, उसे अपने बच्चों के लिए शिक्षा स्वास्थ्य सुविधाएं चाहिए, वह चाहता है कि जान-माल की सुरक्षा की गारंटी।

नब्बे के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने पर छिपी हुई क्षमताओं को बाहर आने में मदद मिली और हमने इसे अपने आईटी सेक्टर के विकास में देखा। उस समय आईआईटी, आईआईएम और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों ने शिक्षा का जो स्तर तैयार किया, उसी से यह विकास संभव हो पाया। सरकारी प्रोत्साहन के साथ व्यक्तिगत प्रयासों ने इसे आसान बनाया और समय के साथ भारत आईटी सेवा प्रदाता क्षेत्र में एक शक्तिपुंज बन गया। इस पारिस्थितिकी ने बड़ी संख्या में हुनर तैयार किया, जिससे न केवल टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल जैसी कई आईटी कंपनियां विकसित हुईं, बल्कि भारत ने अपने हुनर को दुनियाभर में निर्यात भी किया। आज भी तकनीक की दुनिया में कई बड़े नाम भारतीय मूल के लोगों के हैं, जिन्होंने अपने व्यावयासिक जीवन की शुरुआत हमारे आईआईटी और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों से की थी। सत्य नडेला, सुंदर पिचाई, शांतनु नारायण आदि इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। आज जब इस क्षेत्र पर खतरा मंडरा रहा है, तो इसकी जगह कौन लेगा? एआई के कारण हो रहे बदलावों से हजारों नौकरियां जा रही हैं या उन पर खतरा मंडरा रहा है। 90 के दशक में हम मुश्किल हालात से उबरकर आगे बढ़े थे, लेकिन क्या खुद को फिर से खोजने के लिए हमें दोबारा उसी मुश्किल दौर में पहुंचना होगा...? हमारे पास कोई ऐसा तरीका या 'संहिता' है जिसे हम बांच सकें, वह जिसने पिछली बार सफलता दिलाई थी। इसमें नैसकॉम, एसटीपीआई, एसईज़ेड जैसी संस्थाओं का गठन और उनसे जुड़ी टैक्स छूट और बुनियादी ढांचा, और निश्चित रूप से उस दौर के सभी उदारीकरण सुधार शामिल हैं। आईटी उद्योग को बढ़ावा दिया गया; इसे कई तरह की छूटें दी गईं और सरकार ने ज़्यादातर मामलों में मददगार की भूमिका निभाई और जटिल 'लाल फीताशाही' को राह से दूर रखा। आईटी ने देश के लोगों का ध्यान खींचा और आम नागरिक ने इसे गरीबी और कम आय वाले दायरे से बाहर निकलने का एक ज़रिया माना। संक्षेप में कहें तो, इसने हमारे पढ़े-लिखे और कानून का पालन करने वाले नागरिकों को अवसर और सम्मान दिया, और देश को एक बड़े वैश्विक सेवा प्रदाता के रूप में आगे बढ़ाया। आज हमारी अर्थव्यवस्था 90 के दशक की तुलना में कई गुणा बड़ी है, लेकिन इस बड़े पैमाने और उन्नति के साथ एक उलटी स्थिति भी जुड़ी है- मंदी कहीं ज़्यादा नुकसानदेह हो सकती है। जिन लोगों ने जीवनस्तर का एक खास पायदान हासिल कर लिया है और जिन्होंने आईटी के सपने में निवेश किया है, आज उनके पास खोने के लिए बहुत कुछ है। न केवल सीधे तौर पर नौकरी करने वाले लोग, बल्कि देश में आईटी हब के इर्द-गिर्द बनी संपूर्ण अर्थव्यवस्थाएं भी प्रभावित हो सकती हैं।

तो, इसका विकल्प क्या है? हमें फिर से अपनी एक खासियत ढूंढ़नी होगी और सरकार को एक बार फिर नियामक के बजाय मददगार की भूमिका निभानी होगी। हो सकता है कि यह खास जगह एआई-सहायक सेवाएं और डेटा सेंटर के रूप में हो, या फिर ईवी और स्वच्छ ऊर्जा की तरफ़ हो रहे बड़े बदलाव में हो। जैसे-जैसे हमारी ऊर्जा की ज़रूरतें बढ़ रही हैं और मौसम में बदलाव की सच्चाई स्पष्ट होती जा रही है, जीवाश्म ईंधन से दूर हटने का चलन जारी रहेगा। कहा जाता है कि भारतीय कॉर्पोरेट जगत के पास 200 बिलियन डॉलर से ज़्यादा का रिकॉर्ड नकद भंडार है और इसमें से ज़्यादातर पिछले चार सालों में जमा हुआ है... जब बहुत कुछ किए जाने की गुंजाइश है, तब वे भारत में निवेश क्यों नहीं कर रहे हैं? निश्चित रूप से फार्मा जैसे सेक्टर, जिसमें हमारा अधिकांश एपीआई (दवा बनाने का मूल घटक) अभी भी चीन से आयात किया जाता है, न केवल किसी दूसरे देश की मर्ज़ी पर निर्भर हैं, बल्कि उन्हें बड़े निवेश के ज़रिए इस बुनियादी खामी को दूर करने की ज़रूरत है।

निश्चित रूप से, ऊर्जा के सभी प्रारूपों के मामले में अभी भी एक बहुत बड़ा लक्ष्य हासिल करना बाकी है। शिक्षा के मामले में, माता-पिता विदेश में शिक्षा दिलवाने पर बहुत पैसा खर्च करते हैं, हम यहां अच्छे विकल्प क्यों नहीं दे सकते? स्वास्थ्य के मामले में, हमारी करोड़ों की आबादी को कहीं ज़्यादा बड़े आधारभूत ढांचे की ज़रूरत है। मैंने अभी कुछ प्रमुख क्षेत्रों का ज़िक्र किया है जो मेरे दिमाग में आए, मुझे यकीन है कि विशेषज्ञ इस बारे में और भी बहुत कुछ बता सकते हैं। अगर हमारे निजी क्षेत्र को सही माहौल मिले, तो वह वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने और दुनिया का अग्रणी बनने में पूरी तरह काबिल है; हमें बस उन्हें सक्षम बनाने और सहायता करने की ज़रूरत है।

हमें 'मैनहट्टन प्रोजेक्ट' जैसा एक प्रोजेक्ट शुरू करने की ज़रूरत है, जिसमें हम विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, वित्तीय मदद और प्रशासनिक क्षेत्रों के अपने सबसे बेहतरीन लोगों को एक साथ एक ही जगह पर ला सकें। इसके नतीजे तेज़ी से मिलेंगे और यह एक खेल बदलने वाला साबित होगा।

## प्रेरणा

### स्वरों की साधनाः जब गुरु का आशीर्वाद सपनों के रास्ते शिष्य तक पहुंचा

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा केवल सुरों और रागों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गुरु-शिष्य संबंध की उस दिव्य परंपरा का भी प्रतीक है, जिसमें ज्ञान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि संस्कार, साधना, समर्पण और आत्मिक अनुभूति से प्रवाहित होता है। इस परंपरा में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जो यह विश्वास जगाते हैं कि सच्चा ज्ञान शरीर की सीमाओं से परे होता है। जब साधना पूर्ण निष्ठा से की जाती है, तब गुरु का आशीर्वाद समय और मृत्यु की सीमाओं को भी लांघ जाता है। भारतीय संगीत जगत में बनारस घराने की महान ठुमरी गायिका सिद्धेश्वरी देवी और उनकी सुपुत्री सविता देवी का जीवन इसी सत्य का एक अद्भुत उदाहरण माना जाता है। यह केवल एक मां-बेटी की कहानी नहीं, बल्कि उस आध्यात्मिक संबंध की कथा है, जिसमें संगीत सांसों से आगे बढ़कर आत्मा का स्वर बन जाता है। सिद्धेश्वरी देवी भारतीय शास्त्रीय संगीत की उन विलक्षण विभूतियों में गिनी जाती हैं, जिन्होंने बनारस घराने की ठुमरी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनकी गायकी में केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि भावों की ऐसी गहराई थी, जो श्रोताओं के मन को सीधे स्पर्श करती थी। उन्होंने अपने पूरे जीवन को संगीत की साधना में समर्पित कर दिया। उनके लिए संगीत केवल पेशा नहीं था, बल्कि ईश्वर की उपासना का माध्यम था। यही कारण था कि उनके स्वरों में भक्ति, प्रेम, करुणा और जीवन का दर्शन एक साथ झलकता था। उन्होंने अपनी बेटी सविता देवी को भी बचपन से संगीत के संस्कार दिए। घर का वातावरण ऐसा था, जहां हर दिन रियाज, राग और लय की गूंज सुनाई देती थी। छोटी-सी उम्र में ही सविता देवी ने समझ लिया था कि संगीत केवल सीखा नहीं जाता, बल्कि उसे जीना पड़ता है। समय के साथ सविता देवी अपनी मां की प्रिय शिष्या बन गईं। सिद्धेश्वरी देवी उन्हें बड़े धैर्य और प्रेम से ठुमरी की बारीकियां समझाती थीं। वे केवल सुर सही लगाने की शिक्षा नहीं देती थीं, बल्कि यह भी बताती थीं कि किसी बंदिश के पीछे छिपा भाव किस प्रकार श्रोता के हृदय तक पहुंचाया जाए। उनके अनुसार, यदि गायक स्वयं भाव को महसूस नहीं करेगा, तो उसकी प्रस्तुति कभी प्रभावशाली नहीं हो सकती। यही कारण था कि उनकी शिक्षा केवल तकनीकी नहीं, बल्कि भावात्मक और आध्यात्मिक भी थी।

लेकिन नियति को कुछ और मंजूर था। सिद्धेश्वरी देवी का देहावसान हो गया। यह क्षण सविता देवी के जीवन का सबसे कठिन समय था। उन्हें ऐसा लगा मानो उनकी सबसे बड़ी शक्ति उनसे छिन गई हो। संगीत की हर बंदिश, हर राग और हर तान में उन्हें अपनी मां की कमी महसूस होने लगी। वे सोचती थीं कि अब उनकी शंकाओं का समाधान कौन करेगा, नई बंदिशें कौन सिखाएगा और कठिन लयकारी का मार्गदर्शन कौन देगा। लेकिन यहीं से उनके जीवन में एक ऐसा अध्याय शुरू हुआ, जिसने अनेक लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया।

कहा जाता है कि सिद्धेश्वरी देवी अपनी बेटी के सपनों में आने लगीं। यह सामान्य स्वप्न नहीं थे। सविता देवी ने कई अवसरों पर बताया कि वे न पूरी तरह सोई होती थीं और न पूरी तरह जागी हुई। वह एक ऐसी तंद्रा की अवस्था होती थी, जिसमें उनकी मां उन्हें नई ठुमरियां, आलाप, तान और लयकारी सिखाती थीं। वे बंदिशों के सूक्ष्म अंतर समझाती थीं और यह भी बताती थीं कि किसी विशेष शब्द पर कितना भाव देना है, कहां ठहराव रखना है और कहां स्वर को खुलकर बहने देना है। जब सुबह सविता देवी जागतीं और उन्हीं स्वरों को दोहरातीं, तो उन्हें आश्चर्य होता कि सब कुछ वैसा ही याद है, जैसा स्वप्न में सुना था। उनकी प्रस्तुतियों में एक नई गहराई और मिठास दिखाई देने लगी, जिसे सुनकर श्रोता भाव-विभोर हो जाते थे।

यह अनुभव केवल उनके लिए नहीं, बल्कि उनके आसपास के संगीतज्ञों के लिए भी रहस्य और श्रद्धा का विषय बन गया। कई लोगों ने इसे मां के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा का परिणाम माना, तो कुछ ने इसे साधना की वह अवस्था बताया, जहां मन और आत्मा के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है। भारतीय दर्शन में यह विश्वास लंबे समय से रहा है कि जब साधक पूरी निष्ठा से किसी विद्या में डूब जाता है, तब उसे दिव्य प्रेरणा प्राप्त होती है। सविता देवी का अनुभव इसी विश्वास को और मजबूत करता है।

एक बार बनारस में एक अत्यंत प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें देश के अनेक महान कलाकार आमंत्रित थे। मंच पर प्रस्तुति देना किसी भी कलाकार के लिए गौरव की बात थी, लेकिन इतने बड़े संगीतज्ञों के बीच अपनी पहचान बनाना आसान नहीं था। कार्यक्रम में शहनाई के महान उस्ताद बिस्मिल्ला खां सहित कई दिग्गज कलाकार उपस्थित थे। सविता देवी स्वाभाविक रूप से चिंतित थीं। उन्हें लग रहा था कि क्या वे इतने बड़े मंच पर अपनी प्रस्तुति से सभी को प्रभावित कर पाएंगी।

कार्यक्रम से एक रात पहले उन्होंने एक अद्भुत स्वप्न देखा। उन्हें अपनी मां के दर्शन हुए। सिद्धेश्वरी देवी ने मुस्कुराते हुए कहा, "घबराने की कोई जरूरत नहीं है। पूरे विश्वास के साथ गाना, सब अच्छा होगा।" स्वप्न में सविता देवी ने यह भी देखा कि वे अपनी मां के साथ सीढ़ियां चढ़ रही हैं। कुछ ही क्षण बाद उनकी आंख खुल गई। यह स्वप्न उनके लिए केवल एक सपना नहीं था, बल्कि आत्मविश्वास का संदेश था।

अगले दिन जब वे मंच पर पहुंचीं, तो उनके भीतर का भय पूरी तरह समाप्त हो चुका था। उन्होंने पूरे मन, आत्मविश्वास और समर्पण के साथ अपनी प्रस्तुति दी। उनकी ठुमरी में ऐसा भाव, ऐसी मधुरता और ऐसी आत्मीयता थी कि पूरा सभागार मंत्रमुग्ध हो गया। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद केवल श्रोताओं ने ही नहीं, बल्कि उपस्थित वरिष्ठ संगीतज्ञों ने भी उनकी भरपूर प्रशंसा की। उस दिन सविता देवी ने महसूस किया कि मां का आशीर्वाद सचमुच उनके साथ था।

यह प्रसंग केवल एक चमत्कार की कहानी नहीं है। यह हमें यह समझाता है कि गुरु और शिष्य का संबंध केवल भौतिक उपस्थिति पर निर्भर नहीं होता। यदि शिष्य का मन पूरी श्रद्धा, अनुशासन और समर्पण से भरा हो, तो गुरु की शिक्षा जीवनभर उसका मार्गदर्शन करती रहती है। संगीत जैसी साधना में तो यह संबंध और भी गहरा हो जाता है, क्योंकि यहां ज्ञान पुस्तकों से नहीं, बल्कि अनुभव से मिलता है।

आज जब जीवन की गति तेज हो गई है और लोग त्वरित सफलता की तलाश में रहते हैं, तब सिद्धेश्वरी देवी और सविता देवी की यह प्रेरक यात्रा हमें धैर्य, निरंतर अभ्यास और गुरु के प्रति सम्मान का महत्व याद दिलाती है। यह कहानी बताती है कि सच्ची साधना कभी व्यर्थ नहीं जाती। ज्ञान का वास्तविक प्रकाश वही है, जो व्यक्ति के भीतर स्थायी रूप से जलता रहे और हर कठिन मोड़ पर उसे सही दिशा दिखाए। स्वरों की यह विरासत आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में प्रेरणा का स्रोत है।

### ब्राजील-अमेरिका-थाइलैंड ने जिस Ethanol से किया कमाल, भारत में उस पर क्यों मचा बवाल? जटिल सवालों का सरल जवाब 10 लाइन में समझें

90 के दशक का दौर, पैदाइश बिहार की, जहां नए-नए जुगाड़ और देसी तिकड़म से हर नामुमकिन काम को मुमकिन बना दिया जाता था। यह वह दौर था जब अभाव ही आविष्कार की असली जननी हुआ करती थी। उस ज़माने में जब पेट्रोल के दाम बढ़ने लगते या उसकी किल्लत होती, तो लोग गैरेज में अपनी पुरानी याज़्दी, राजदूत या बुलेट खड़ी नहीं करते थे, बल्कि उसमें किरोसीन (मिट्टी का तेल) डालकर सड़कों पर धुआं उड़ाते निकल पड़ते थे। हालांकि इंजन खटखटाने लगता था और गाड़ी से सफेद धुएं का गुबार निकलता था, लेकिन गाड़ी चल पड़ती थी। इसी तिकड़मी माहौल में अक्सर यह कौतूहल और चर्चा भी गर्म रहती थी कि अगर महुआ की दारू से इंसान झूम सकता है, तो भला उससे मोटरसाइकिल कैसे चल सकती है? लोग हंसी-मजाक या गंभीर चौपालों में यह कयास लगाते थे कि जिस तरह स्पिरिट या किरोसीन से गाड़ियां रेंग सकती हैं, क्या पता आने वाले वक्त में यह महुआ की शराब भी गाड़ियों का ईंधन बन जाए! अपने देश में 2026 में कुछ वैसा ही हो रहा है। एक तरफ सोशल मीडिया पर वीडियो की बाढ़ है और हर कोई एक बोतल लिए हुए है और कह रहा है कि यह देखिए यह ऊपर रहा पेट्रोल और यह नीचे रहा इथेनॉल। नितिन गडकरी ने तो इथेनॉल इस्तेमाल करके सारी गाड़ियों का बांटाधार कर दिया। बहुत सारे यूजर्स नितिन गडकरी को भला-बुरा कह रहे हैं और कह रहे हैं कि एथनॉल डालकहमारी 12 लाख, 13 लाख, 14 लाख की गाड़ी को बर्बाद कर दिया। लोग वीडियो बना रहे हैं। कुछ लोग सवाल कर रहे हैं कि क्या एथनॉल मिश्रित पेट्रोल से गाड़ियां खराब हो रही हैं। क्या एथनॉल की वजह से गाड़ियों के इंजन फेल हो रहे हैं। क्या एथनॉल से गाड़ियों में जंग लग रही है। पार्ट-पुर्जे बेकार हो रहे हैं। क्या एथनॉल की वजह से गाड़ियों का माइलेज कम हो रहा है। आज तमाम सवालों का एमआरआई स्कैन करेंगे। कुछ लोगों ने तो यहां तक दावा किया कि पेट्रोल में चींटी लग रही है। उन लोगों ने सोचा होगा कि गन्ने से इथेनॉल बनता है तो चींटी यहां भी लग सकती है। इन्हें कौन समझाए कि एथनॉल को पहले डिस्टलरी प्लांट में लिया जाता है। वहां फर्मेंट होता है, मिक्स होता है। उसमें चींटी नहीं लग सकती। ठीक उसी तरह जैसे दारू भले ही अंगूर के रस से बनती हो या जौ से बनती हो पर दारू में कभी चींटी लगते सुना है? तो जिस तरह दारू में चींटी नहीं लगती उसी तरह पेट्रोल में मिलाए गए एथनॉल में भी चींटी नहीं लगती। यह भ्रामक है। इसके अलावा बहुत सारे लोग वो पानी वाला बोतल ले घूम रहे हैं। ये कह रहे हैं कि ऊपर पेट्रोल है नीचे इथेनॉल है। तो जो बेसिक भी साइंस का स्टूडेंट है वो जानता है कि एथनॉल घुलनशील है। वो अलग-अलग नहीं हो सकता। जैसे दूध में हम कितना भी पानी मिला दें तो पानी अलग और दूध अलग बोतल में आप नहीं दिखा सकते उसी तरह इथेनॉल अलग और पेट्रोल अलग नहीं दिखा सकते तो यह खबर भी भ्रामक है।

आज से करीब 50 साल पहले तक ब्राजील भी बाकी देशों की तरह ही पेट्रोल पर ही चलता था। लेकिन उसके पास अपनी जरूरत के हिसाब से पर्याप्त तेल मौजूद नहीं था। यही वजह थी कि वह भी अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा विदेशों से ही आयात करता था। लेकिन फिर आया साल 1973 जब दुनिया में तेल की किल्लत शुरू हुई। मिडिल ईस्ट में युद्ध छिड़ गया और ऑयल एक्सपोर्ट करने वाले देशों ने सप्लाई घटा दी और देखते ही देखते क्रूड ऑयल की कीमतों में कई गुना तक बढ़ोतरी हो गई। इसका सीधा असर ब्राजील की अर्थव्यवस्था पर पड़ने लगा। सरकार का इंपोर्ट बिल तेजी से बढ़ने लगा। इसी बीच ब्राजील को समझ आ गया कि अगर वह विदेशों के तेल पर ही निर्भर रहेगा तो भविष्य का हर संकट उसकी अर्थव्यवस्था को हिला सकता है। वहीं से ब्राजील की सबसे बड़ी एनर्जी रिवॉल्यूशन की शुरुआत हुई। साल 1975 में ब्राजील सरकार ने एक पूरा प्रोग्राम ल्च किया जिसका मकसद था पेट्रोल का विकल्प तैयार करना और इसके लिए सरकार ने इथेनॉल को चुना। दरअसल साल 1975 में भी इथेनॉल कोई नया फ्यूल नहीं था। इसका इस्तेमाल पहली बार 19वीं सदी में किया गया था। जब इंटरनल कंबस्शन इंजंस पर इसका प्रयोग किया गया। तब इथेनॉल को पहली बार फ्यूल के तौर पर देखा गया और तब से ही इसकी गाड़ियों का इस्तेमाल करने का भी प्रयास शुरू हो गया था। यहां तक कि हेनरी फोर्ड की पहली मॉडल टी कार भी पेट्रोल के साथ-साथ इथेनॉल पर भी चल सकती थी। लेकिन उस समय दुनिया में सस्ता क्रूड ऑयल आसानी से मिल जाता था। जिसकी वजह से ज्यादातर देशों ने पेट्रोल को अपना मुख्य फ्यूल बना लिया। लेकिन 1973 के दौरान जब ऑयल क्राइसिस के बाद ब्राजील ने इस पुराने विकल्प को एक बार फिर दोबारा से देखा क्योंकि इथेनॉल शुगरकेन यानी कि गन्ने से बनता है और तब ब्राजील के पास भरपूर मात्रा में गन्ना भी मौजूद था। सरकार ने सोचा तो फिर विदेशों से ऑयल मंगवाने की बजाय क्यों ना अपने ही खेतों से फ्यूल तैयार किया जाए और यहीं से पूरी कहानी बदल गई। सरकार ने किसानों को गन्ने उगाने के लिए सब्सिडी देना भी शुरू कर दिया। नई ईथेनॉल फैक्ट्रीज भी लगाई गई और कार कंपनियों को ऐसे इंजन बनाने के लिए खासकर की बढ़ावा दिया गया जो इथेनॉल पर चल सके। इतना ही नहीं सरकार ने इथेनॉल को देश भर में पहुंचाने के लिए स्टोरेज और सप्लाई नेटवर्क पर भी काफी काम किया और फ्यूल स्टेशन पर भी इसकी उपलब्धता बढ़ाने की तैयारी शुरू कर दी गई। यानी कि ब्राजील सिर्फ नया फ्यूल बनाने पर ही नहीं जुटा था बल्कि उसे तैयार करने, देश भर में पहुंचाने और गाड़ियों तक उपलब्ध कराने का भी पूरा इकोसिस्टम वह खड़ा कर रहा था। साल 2003 और यहीं से ब्राजील के इथनॉल प्रोग्राम को उसकी सबसे बड़ी ताकत मिल गई। क्योंकि इसी साल ब्राजील में पहली बार फ्लेक्स फ्यूल कार लॉन्च हुई।

## अभियान

### गुप्त नवरात्रि का अद्भुत रहस्यः दस महाविद्याओं की दिव्य साधना से कैसे खुलते हैं शक्ति, सिद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के द्वार

भारतीय सनातन परंपरा में नवरात्रि केवल देवी आराधना का पर्व नहीं, बल्कि आत्मशक्ति के जागरण, साधना, संयम और आध्यात्मिक उन्नति का महान अवसर माना जाता है। अधिकांश लोग चैत्र और शारदीय नवरात्रि से परिचित हैं, जिनमें मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। लेकिन इन दोनों प्रसिद्ध नवरात्रियों के अतिरिक्त वर्ष में दो ऐसी नवरात्रियां भी आती हैं, जिनका महत्व अत्यंत गूढ़, रहस्यमय और आध्यात्मिक दृष्टि से असाधारण माना गया है। इन्हें गुप्त नवरात्रि कहा जाता है। यह पर्व बाहरी उत्सव से अधिक आंतरिक साधना का अवसर होता है। जहां सामान्य नवरात्रि में देवी की आराधना सार्वजनिक रूप से होती है, वहीं गुप्त नवरात्रि में साधना का मूल आधार मौन, एकांत, अनुशासन और गोपनीयता होती है। यही कारण है कि इसे सिद्ध योगियों, तांत्रिकों, अघोर साधकों और गंभीर आध्यात्मिक साधना करने वाले उपासकों का विशेष पर्व माना गया है।

आषाढ़ और माघ मास में आने वाली गुप्त नवरात्रि का उल्लेख अनेक तांत्रिक ग्रंथों, शक्तिपुराणों तथा देवी उपासना से जुड़े प्राचीन साहित्य में मिलता है। वर्ष 2026 में आषाढ़ गुप्त नवरात्रि 15 जुलाई से प्रारंभ होकर 23 जुलाई तक रहेगी। इन नौ दिनों में शक्ति की उन दस दिव्य अभिव्यक्तियों की उपासना की जाती है, जिन्हें दस महाविद्याएं कहा जाता है। ये केवल देवियों के स्वरूप नहीं हैं, बल्कि सृष्टि के दस महान आध्यात्मिक सिद्धांतों और ब्रह्मांडीय शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। माना जाता है कि जो साधक श्रद्धा, संयम और विधि-विधान के साथ इनकी आराधना करता है, उसके जीवन से भय, भ्रम, बाधाएं और नकारात्मक शक्तियां दूर होती हैं तथा ज्ञान, साहस, समृद्धि और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

गुप्त नवरात्रि को "गुप्त" कहे जाने के पीछे भी गहरा आध्यात्मिक अर्थ छिपा है। यहां साधना का उद्देश्य प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्मपरिवर्तन होता है। प्राचीन मान्यता है कि जितनी अधिक साधना गोपनीय रखी जाती है, उसका आध्यात्मिक प्रभाव उतना ही अधिक होता है। इसलिए इस दौरान साधक अपने जप, तप, मंत्र, अनुष्ठान और साधना का उल्लेख दूसरों से नहीं करते। यह परंपरा अहंकार से बचाने और साधना की ऊर्जा को सुरक्षित रखने का प्रतीक मानी जाती है। सनातन दर्शन के अनुसार, आध्यात्मिक शक्ति मौन में सबसे अधिक विकसित होती है और गुप्त नवरात्रि उसी मौन साधना का महापर्व है।

दस महाविद्याओं की उत्पत्ति से जुड़ी कथा भी अत्यंत रोचक और दार्शनिक है। धार्मिक मान्यता के अनुसार जब भगवान शिव ने किसी कारणवश माता सती को रोकना चाहा, तब देवी ने अपने विराट स्वरूप से दस दिशाओं में अपने दस दिव्य रूप प्रकट कर दिए। इन दस स्वरूपों ने दसों दिशाओं को आच्छादित कर दिया और शिव के लिए किसी भी दिशा में जाना असंभव हो गया। यही दस स्वरूप आगे चलकर दस महाविद्याओं के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रत्येक महाविद्या शक्ति के एक विशिष्ट आयाम का प्रतिनिधित्व करती है और जीवन की अलग-अलग समस्याओं तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं से जुड़ी मानी जाती है। महाविद्याओं में सबसे पहला स्थान मां काली का है। काली समय, मृत्यु, निर्भयता और अहंकार के विनाश की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। उनका स्वरूप यह संदेश देता है कि जो व्यक्ति अपने भय और अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव करता है। गुप्त नवरात्रि में मां काली की उपासना से नकारात्मक ऊर्जा, शत्रु भय और मानसिक अस्थिरता दूर होने की मान्यता है।

दूसरा स्वरूप मां तारा का है। तारा करुणा, ज्ञान और जीवनरक्षा की देवी मानी जाती हैं। कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शन देने वाली शक्ति के रूप में उनकी आराधना की जाती है। तांत्रिक परंपरा में तारा को अत्यंत प्रभावशाली देवी माना गया है, जो साधक को आध्यात्मिक अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं।

तीसरी महाविद्या मां त्रिपुर सुंदरी हैं, जिन्हें श्रीविद्या परंपरा का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वे सौंदर्य, संतुलन, प्रेम, ज्ञान और परम आनंद की प्रतीक हैं। माना जाता है कि उनकी कृपा से व्यक्ति के भीतर और बाहर दोनों स्तरों पर सामंजस्य स्थापित होता है। आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ पारिवारिक सुख और मानसिक शांति के लिए भी उनकी पूजा अत्यंत शुभ मानी जाती है।

मां भुवनेश्वरी समस्त ब्रह्मांड की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। उनका स्वरूप यह बताता है कि संपूर्ण सृष्टि देवी की चेतना से संचालित होती है। उनकी उपासना से नेतृत्व क्षमता, स्थिरता, सम्मान और जीवन में विस्तार प्राप्त होने की मान्यता है। मां छिन्नमस्ता का स्वरूप पहली दृष्टि में अत्यंत रहस्यमय प्रतीत होता है, लेकिन उसका आध्यात्मिक अर्थ अत्यंत गहरा है। वे आत्मबलिदान, इच्छाओं पर नियंत्रण और आत्मजागरण की प्रतीक हैं। उनका संदेश है कि आत्मविकास के लिए व्यक्ति को अपने अहंकार और स्वार्थ का त्याग करना आवश्यक है।

छठी महाविद्या मां त्रिपुर भैरवी हैं। वे शक्ति, साहस, तपस्या और अनुशासन की देवी मानी जाती हैं। जो साधक अपने जीवन में दृढ़ संकल्प, कठिन परिश्रम और आत्मनियंत्रण विकसित करना चाहता है, उसके लिए उनकी उपासना विशेष फलदायी मानी गई है।

मां धूमावती का स्वरूप जीवन के उस सत्य का प्रतीक है, जिसे सामान्यतः लोग स्वीकार नहीं करना चाहते। वे विरक्ति, वैराग्य और संसार की अस्थिरता का बोध कराती हैं। उनकी साधना व्यक्ति को मोह और भ्रम से मुक्त कर आत्मचिंतन की दिशा में प्रेरित करती है।

मां बगलामुखी को शत्रु विजय और वाणी पर नियंत्रण की देवी माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि उनकी कृपा से विरोधी शक्तियां निष्प्रभावी होती हैं और साधक को आत्मविश्वास तथा निर्णय क्षमता प्राप्त होती है। न्यायालय, प्रतियोगिता और कठिन संघर्षों में उनकी आराधना विशेष रूप से की जाती है। मां मातंगी ज्ञान, संगीत, कला, वाणी और बुद्धि की देवी हैं। वे यह सिखाती हैं कि ज्ञान तभी सार्थक है, जब उसका उपयोग समाज और मानवता के कल्याण के लिए किया जाए। कलाकार, लेखक, संगीतज्ञ और विद्यार्थी विशेष रूप से उनकी उपासना करते हैं।

दसवीं महाविद्या मां कमला हैं, जिन्हें लक्ष्मी का तांत्रिक स्वरूप माना जाता है। वे केवल धन की देवी नहीं, बल्कि समृद्धि, संतोष, सौभाग्य और आध्यात्मिक संपन्नता का भी प्रतीक हैं। उनकी आराधना से जीवन में आर्थिक स्थिरता और सकारात्मक ऊर्जा आने की मान्यता है।

गुप्त नवरात्रि के दौरान साधना का समय भी विशेष महत्व रखता है। शास्त्रों में मध्यरात्रि, निशीथ काल और ब्रह्ममुहूर्त को साधना के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। हालांकि सामान्य गृहस्थ श्रद्धालु प्रातःकाल अथवा सायंकाल भी पूरी श्रद्धा के साथ देवी की पूजा कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह मानी गई है कि साधना शुद्ध मन, सात्विक विचार और पूर्ण आस्था के साथ की जाए।

इन नौ दिनों में सात्विक भोजन, ब्रह्मचर्य, संयम, सत्य, अहिंसा और मन की पवित्रता का विशेष महत्व बताया गया है। यदि संभव हो तो अखंड दीपक प्रज्वलित करना शुभ माना जाता है। प्रतिदिन देवी के समक्ष दीप, धूप, पुष्प और नैवेद्य अर्पित कर संबंधित महाविद्या के मंत्रों का जप किया जा सकता है। जिन लोगों को तांत्रिक मंत्रों की विधिवत दीक्षा प्राप्त नहीं है, वे केवल "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" अथवा "या देवी सर्वभूतेषु" जैसे सार्वभौमिक देवी मंत्रों का श्रद्धापूर्वक जप कर सकते हैं।

धार्मिक परंपरा यह भी बताती है कि गुप्त नवरात्रि में किसी भी प्रकार की साधना बिना योग्य गुरु के जटिल तांत्रिक प्रयोगों के रूप में नहीं करनी चाहिए। आज अनेक लोग इंटरनेट या अपूर्ण जानकारी के आधार पर कठिन अनुष्ठान करने का प्रयास करते हैं, जो शास्त्रीय दृष्टि से उचित नहीं माना जाता। सामान्य श्रद्धालुओं के लिए भक्ति, जप, ध्यान, पाठ, सेवा और आत्मसंयम ही सबसे श्रेष्ठ साधना मानी गई है।

गुप्त नवरात्रि का सबसे बड़ा संदेश यह है कि वास्तविक शक्ति बाहर नहीं, हमारे भीतर विद्यमान है। देवी की आराधना उस आंतरिक शक्ति को जागृत करने का माध्यम है। दस महाविद्याएं जीवन के दस महत्वपूर्ण आयामों—साहस, ज्ञान, प्रेम, करुणा, अनुशासन, वैराग्य, समृद्धि, वाणी, आत्मबल और आध्यात्मिक जागरण—का प्रतीक हैं। जब साधक इन गुणों को अपने जीवन में धारण करता है, तभी उसकी साधना पूर्ण मानी जाती है।

यही कारण है कि गुप्त नवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आत्मशोधन, आत्मअनुशासन और आत्मजागरण का महाअवसर है। जो व्यक्ति इन नौ दिनों में श्रद्धा, संयम और सकारात्मक संकल्प के साथ देवी की उपासना करता है, उसके भीतर नई ऊर्जा, नया आत्मविश्वास और जीवन को सही दिशा देने वाली चेतना का विकास होता है।

PRGI NO. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

# ढोलेरा की विकास गाथा में जुड़ा नया अध्याय, 'द क्राउन' परियोजना के भूमि पूजन के साथ निवेश और स्मार्ट सिटी विजन को मिली नई उड़ान

अहमदाबाद। देश के सबसे महत्वाकांक्षी ग्रीनफील्ड स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट ढोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन (SIR) की विकास यात्रा में रविवार को एक और महत्वपूर्ण पड़ाव जुड़ गया। अधिराज ब्रोगहर डेवलपर LLP की बहुप्रतीक्षित रियल एस्टेट परियोजना 'द क्राउन' का भव्य भूमि पूजन समारोह रोजका रोड स्थित परियोजना स्थल पर वैदिक मंत्रोच्चार और पारंपरिक धार्मिक विधि-विधान के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर उत्तर-पूर्वी दिल्ली से सांसद एवं प्रसिद्ध कलाकार मनोज तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, निवेशकों, रियल एस्टेट विशेषज्ञों, व्यापारिक सहयोगियों तथा बड़ी संख्या में आमंत्रित अतिथियों की उपस्थिति ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि ढोलेरा अब केवल भविष्य की परिकल्पना नहीं, बल्कि तेजी से साकार होती औद्योगिक और शहरी क्रांति का केंद्र बन चुका है।

भूमि पूजन समारोह केवल एक रियल एस्टेट परियोजना की शुरुआत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह ढोलेरा को भारत के सबसे आधुनिक औद्योगिक, निवेश और स्मार्ट सिटी हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में बढ़ते विश्वास और निवेशकों के उत्साह का भी प्रतीक बना। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथियों ने क्षेत्र में विकसित हो रहे विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे, औद्योगिक निवेश और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की।

समारोह से पूर्व सांसद मनोज तिवारी ने ब्रोगहर रियल्टी के संस्थापक एवं अधिराज ब्रोगहर डेवलपर LLP के निदेशक अक्षय कुमार तथा कंपनी के अन्य निदेशकों के साथ हेलीकॉप्टर के माध्यम से पूरे ढोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन (SIR) का विस्तृत हवाई सर्वेक्षण किया। इस हवाई निरीक्षण के दौरान उन्होंने क्षेत्र में विकसित हो रहे चौड़े एक्सप्रेस-वे, औद्योगिक कॉरिडोर, स्मार्ट सड़क नेटवर्क, भविष्य के औद्योगिक क्षेत्रों, आवासीय सेक्टरों, सार्वजनिक सुविधाओं तथा निर्माणाधीन आधारभूत संरचनाओं का व्यापक अवलोकन किया। हेलीकॉप्टर से दिखाई दे रही तेज विकास गति ने उपस्थित सभी लोगों को यह विश्वास दिलाया कि आने वाले वर्षों में ढोलेरा भारत के सबसे बड़े औद्योगिक और आर्थिक केंद्रों में शामिल होगा।

इस अवसर पर अभिनेत्री, सामाजिक कार्यकर्ता एवं महिला सशक्तिकरण की समर्थक श्वेता चौहान भी मौजूद रहीं।




उन्होंने भी ढोलेरा में विकसित हो रहे आधुनिक शहरी ढांचे और सुव्यवस्थित विकास मॉडल की सराहना करते हुए इसे भविष्य का शहर बताया।

हेलीकॉप्टर सर्वेक्षण के दौरान विशेष रूप से क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहे औद्योगिक निवेश, मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी, स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और सरकार द्वारा किए जा रहे बड़े पैमाने के निवेश पर चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने बताया कि ढोलेरा को इस प्रकार विकसित किया जा रहा है कि यहां उद्योग, आवास, परिवहन, ऊर्जा, जल प्रबंधन और डिजिटल सेवाएं एकीकृत रूप से संचालित हों, जिससे यह भविष्य का विश्वस्तरीय स्मार्ट औद्योगिक शहर बन सके।

ब्रोगहर रियल्टी के संस्थापक एवं अधिराज ब्रोगहर डेवलपर LLP के निदेशक अक्षय कुमार ने कहा कि ढोलेरा में विकास की वर्तमान गति वास्तव में उत्साहवर्धक है। उन्होंने कहा कि हेलीकॉप्टर सर्वेक्षण के दौरान स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि यहां केवल भवन निर्माण नहीं हो रहा, बल्कि भविष्य का आधुनिक आर्थिक शहर आकार ले रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वस्तरीय सड़क नेटवर्क, आधुनिक शहरी नियोजन, बड़े औद्योगिक निवेश और सरकारी प्रतिबद्धता यह संकेत देते हैं कि ढोलेरा आने वाले समय में भारत की आर्थिक प्रगति का प्रमुख इंजन बनेगा। उन्होंने सांसद मनोज तिवारी के आगमन को कंपनी के लिए सम्मान की बात बताते हुए कहा कि उनके साथ ढोलेरा के भविष्य को लेकर सार्थक चर्चा हुई।

इस अवसर पर अधिराज ब्रोगहर डेवलपर LLP के सभी प्रमुख साझेदार—अक्षय कुमार, शैलेश गोयल, कमल गोयल, धन प्रकाश, तुषार गर्ग और सचिन गोयल—भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि कंपनी केवल रियल एस्टेट परियोजनाएं विकसित नहीं कर रही, बल्कि ढोलेरा के दीर्घकालिक विकास विजन के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण और सुव्यवस्थित शहरी परिसरों का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्य अतिथि मनोज तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि ढोलेरा आज केवल गुजरात की परियोजना नहीं, बल्कि पूरे भारत की औद्योगिक महत्वाकांक्षा का प्रतीक बन चुका है। उन्होंने कहा कि जिस गति से यहां विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना तैयार की जा रही है, वह आने वाले वर्षों में भारत को वैश्विक विनिर्माण और निवेश मानचित्र पर नई पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यहां विकसित हो रहे औद्योगिक क्लस्टर, आधुनिक परिवहन नेटवर्क और स्मार्ट सिटी सुविधाएं देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देंगी।

कार्यक्रम के दौरान सेमीकंडक्टर विनिर्माण भी चर्चा का प्रमुख विषय रहा। विशेष रूप से टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा ढोलेरा में स्थापित किए जा रहे सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट को भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में ऐतिहासिक कदम बताया गया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह परियोजना न केवल देश की चिप निर्माण क्षमता बढ़ाएगी, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग, अनुसंधान, डिज़ाइन, आपूर्ति श्रृंखला और सहायक उद्योगों के विकास को भी नई गति देगी। इससे हजारों प्रत्यक्ष और लाखों अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उत्पन्न होने की संभावना है।

ढोलेरा को नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy) का प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में चल रही योजनाओं पर भी विस्तार से चर्चा हुई। यहां बड़े पैमाने पर विकसित की जा रही सौर ऊर्जा परियोजनाएं, हरित ऊर्जा आधारित औद्योगिक ढांचा, पर्यावरण-अनुकूल निर्माण प्रणाली और सतत शहरी विकास मॉडल भविष्य में ढोलेरा को देश के सबसे आधुनिक और पर्यावरण-संवेदनशील औद्योगिक शहरों में शामिल कर सकते हैं। विशेषज्ञों ने बताया कि ढोलेरा की सबसे बड़ी ताकत इसका सुनियोजित मास्टर प्लान है, जिसमें उद्योग, आवासीय क्षेत्र, व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स, सार्वजनिक परिवहन, जल निकासी, डिजिटल नेटवर्क, हरित क्षेत्र और सामाजिक अधोसंरचना को एकीकृत रूप से विकसित किया जा रहा है। यही कारण है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों की रुचि लगातार इस क्षेत्र की ओर बढ़ रही है।

भूमि पूजन समारोह के दौरान वैदिक मंत्रोच्चार, पारंपरिक पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच 'द क्राउन' परियोजना की औपचारिक शुरुआत हुई। उपस्थित अतिथियों ने इसे केवल एक रियल एस्टेट परियोजना का शुभारंभ नहीं, बल्कि ढोलेरा के विकसित होते भविष्य, भारत की नई औद्योगिक क्रांति और आधुनिक स्मार्ट सिटी विजन का प्रतीक बताया।

अधिराज ब्रोगहर डेवलपर LLP ने विश्वास व्यक्त किया कि उसकी यह परियोजना ढोलेरा के दीर्घकालिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी तथा गुणवत्तापूर्ण शहरी विकास, आधुनिक जीवनशैली और निवेश के नए अवसर उपलब्ध कराएगी। कार्यक्रम का समापन सभी अतिथियों के आशीर्वाद, पारंपरिक पूजा-अर्चना और भविष्य में ढोलेरा को वैश्विक स्तर का औद्योगिक एवं स्मार्ट सिटी केंद्र बनाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

## सरकारी अस्पताल में लापरवाही का सनसनीखेज मामला, एक्सपायर्ड ग्लूकोज चढ़ाने से बिगड़ी महिला की हालत, जांच के आदेश

गुजरात के बनासकांठा जिले के दंता सिविल अस्पताल में चिकित्सा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करने वाली एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। इलाज के लिए अस्पताल पहुंची एक महिला मरीज को कथित तौर पर एक्सपायरी डेट निकल चुकी ग्लूकोज की बोतल चढ़ा दी गई। कुछ ही देर बाद महिला की तबीयत अचानक बिगड़ने लगी, उसके हाथ-पैरों में सूजन आ गई और परिजनों में हड़कंप मच गया। जब परिजनों ने ग्लूकोज की बोतल पर अंकित निर्माण और एक्सपायरी तिथि देखी तो उन्हें पता चला कि दवा की वैधता अवधि कई सप्ताह पहले समाप्त हो चुकी थी। इसके बाद अस्पताल परिसर में जमकर हंगामा हुआ और परिजनों ने अस्पताल प्रशासन पर घोर लापरवाही का आरोप लगाते हुए जिम्मेदार डॉक्टरों और कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। जानकारी के अनुसार, संबंधित महिला स्वास्थ्य संबंधी परेशानी के कारण उपचार कराने अस्पताल पहुंची थी। उस समय क्षेत्र के अधिकांश निजी अस्पताल बंद होने के कारण परिजनों ने सरकारी अस्पताल पर भरोसा किया और मरीज को दंता सिविल अस्पताल में भर्ती कराया। प्राथमिक जांच के बाद महिला को ग्लूकोज चढ़ाने का निर्णय लिया गया। आरोप है कि ड्यूटी पर मौजूद कर्मचारियों ने बिना एक्सपायरी डेट की जांच किए ही ग्लूकोज की बोतल मरीज को लगा दी। उपचार सामान्य रूप से शुरू हुआ, लेकिन कुछ ही देर बाद महिला की तबीयत तेजी से बिगड़ने लगी। उसके हाथ-पैरों में सूजन




आने लगी और वह असहज महसूस करने लगी। महिला की बिगड़ती हालत देखकर परिजनों को संदेह हुआ। उन्होंने ग्लूकोज की बोतल की जांच की तो उस पर अंकित एक्सपायरी डेट देखकर उनके होश उड़ गए। आरोप है कि बोतल की वैधता अवधि 5 मई को ही समाप्त हो चुकी थी, जबकि उसे कई सप्ताह बाद मरीज को चढ़ाया जा रहा था। उस समय तक आधी से अधिक ग्लूकोज की बोतल महिला के शरीर में जा चुकी थी। यह जानकारी सामने आते ही परिजनों ने अस्पताल प्रशासन से जवाब मांगा और देखते ही देखते अस्पताल परिसर में तनावपूर्ण स्थिति बन गई।

परिजनों का कहना है कि यदि समय रहते उनकी नजर बोतल पर अंकित एक्सपायरी डेट पर नहीं पड़ती, तो महिला की जान भी खतरे में पड़ सकती थी। उनका आरोप है कि सरकारी अस्पतालों में दवाओं और मेडिकल स्टॉक की नियमित जांच नहीं होने के कारण मरीजों की जान जोखिम में पड़ रही है। उन्होंने यह भी कहा कि अस्पताल में भर्ती होने वाला प्रत्येक मरीज यह विश्वास लेकर आता है कि उसे सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण उपचार मिलेगा, लेकिन इस तरह की लापरवाही चिकित्सा व्यवस्था पर लोगों के भरोसे को कमजोर करती है।

घटना को लेकर परिजनों ने अस्पताल प्रशासन पर मामले को दबाने का भी आरोप लगाया। उनका कहना है कि जैसे ही एक्सपायर्ड ग्लूकोज की जानकारी सामने आई, ड्यूटी पर मौजूद नर्स कुछ समय के लिए वहां से चली गई और मौके पर कोई जिम्मेदार चिकित्सक भी उपलब्ध नहीं था। परिजनों के अनुसार, शुरुआत में कर्मचारियों ने घटना को सामान्य बताकर टालने की कोशिश की, लेकिन जब हंगामा बढ़ा और अन्य मरीजों के परिजन भी एकत्र होने लगे, तब वरिष्ठ अधिकारियों को बुलाया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए अस्पताल प्रशासन को तत्काल हस्तक्षेप करना पड़ा। अस्पताल अधीक्षक ने स्वीकार किया कि मेडिकल स्टोर में एक्सपायरी डेट निकल चुकी ग्लूकोज की एक बोतल स्टॉक में रह गई थी, जिसे गलती से मरीज को लगा दिया गया। उन्होंने इसे गंभीर प्रशासनिक चूक बताते हुए कहा कि पूरे मामले की विभागीय जांच शुरू कर दी गई है और दोषी पाए जाने वाले किसी भी कर्मचारी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। अस्पताल प्रशासन ने प्रारंभिक कार्रवाई करते हुए संबंधित डॉक्टर और ड्यूटी पर तैनात नर्स को कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

## भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते से खुले वैश्विक बाजार के नए द्वार, भारतीय उद्योगों को मिलेगा बड़ा निर्यात अवसर

नई दिल्ली। भारत की वैश्विक व्यापार रणनीति को नई मजबूती देते हुए भारत और ब्रिटेन के बीच हुआ व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौता (सीईटीए) बुधवार से औपचारिक रूप से लागू हो गया। इस ऐतिहासिक समझौते के साथ ही भारतीय निर्यातकों के लिए दुनिया के सबसे बड़े और विकसित उपभोक्ता बाजारों में से एक ब्रिटेन के द्वार पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान और प्रतिस्पर्धी हो गए हैं। समझौते के तहत भारत से ब्रिटेन भेजे जाने वाले लगभग 99 प्रतिशत उत्पादों पर आयात शुल्क पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। इससे भारतीय उद्योगों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ेगी, निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, लाखों नए रोजगार सृजित होने की संभावना है और देश के विनिर्माण क्षेत्र को नई ऊर्जा मिलेगी। सरकार का मानना है कि यह समझौता केवल व्यापारिक दस्तावेज नहीं, बल्कि भारत के "आत्मनिर्भर भारत", "मेक इन इंडिया" और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में मजबूत भागीदारी के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

भारत और ब्रिटेन के बीच यह समझौता लंबे समय तक चली बातचीत के बाद अस्तित्व में आया है। दोनों देशों ने पिछले वर्ष 25 जुलाई को इस पर हस्ताक्षर किए थे और अब आवश्यक संवैधानिक एवं कानूनी प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद इसे लागू कर दिया गया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लागू होने वाला यह छठा मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) है। इससे पहले भारत मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) तथा ओमान के साथ भी ऐसे समझौते कर चुका है। सरकार का उद्देश्य भारतीय उद्योगों को अधिक से अधिक वैश्विक बाजार उपलब्ध कराना और निर्यात आधारित आर्थिक विकास को गति देना है। इस समझौते का सबसे बड़ा लाभ भारतीय कपड़ा एवं परिधान उद्योग को मिलने की उम्मीद है। ब्रिटेन लंबे समय से भारतीय वस्त्रों और रेडीमेड गारमेंट्स का बड़ा आयातक रहा है, लेकिन अब तक वहां चार से 12 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगने के कारण भारतीय उत्पादों को प्रतिस्पर्धा में कठिनाई होती थी। शुल्क समाप्त होने के बाद भारतीय कपड़ा उद्योग को बड़ा मूल्य लाभ मिलेगा। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों के लाखों वस्त्र निर्माताओं, बुनकरों और निर्यातकों को इसका सीधा फायदा मिलने की संभावना है। जूता-चप्पल उद्योग भी इस समझौते का प्रमुख लाभार्थी होगा। आगरा, कानपुर, चेन्नई और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में निर्मित फुटवियर अब ब्रिटेन में बिना आयात शुल्क के पहुंच सकेंगे। इससे भारतीय फुटवियर की कीमतें प्रतिस्पर्धी होंगी और निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

कालीन उद्योग के लिए भी यह समझौता अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भदोही, मिर्जापुर, जयपुर और कश्मीर जैसे क्षेत्रों में तैयार होने वाले हस्तनिर्मित कालीन अब ब्रिटेन में पहले की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी कीमत पर उपलब्ध होंगे। भारतीय हस्तशिल्प और हस्तनिर्मित उत्पादों को यूरोपीय उपभोक्ताओं के बीच पहले से अच्छी पहचान प्राप्त है और शुल्क समाप्त होने से इनकी मांग और बढ़ सकती है।

कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को भी इस समझौते से व्यापक लाभ मिलने की संभावना है। भारतीय मसाले, चाय, कॉफी, बासमती चावल, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, अचार, जैविक उत्पाद, फल-सब्जियां तथा समुद्री उत्पाद अब ब्रिटेन में कम लागत पर पहुंच सकेंगे। इससे किसानों, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और कृषि निर्यातकों की आय बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है। विशेष रूप से समुद्री उत्पादों और मसालों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान लगाया जा रहा है।

व्यापार समझौते के तहत भारत ने भी ब्रिटेन को कुछ महत्वपूर्ण रियायतें दी हैं। ब्रिटेन से आयात होने वाली पूरी तरह निर्मित कारों और ट्रकों पर लगने वाला 110 प्रतिशत आयात शुल्क चरणबद्ध तरीके से घटाकर 10 प्रतिशत किया जाएगा। हालांकि यह रियायत निर्धारित कोटा और शर्तों के तहत लागू होगी। इसके अलावा ब्रिटेन से आने वाली मशीनरी, उच्च तकनीक उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक्स, चिकित्सा उपकरण, चॉकलेट, कॉस्मेटिक्स तथा अन्य कई उपभोक्ता उत्पादों की कीमतों में भी कमी आने की संभावना है, जिससे भारतीय उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा।

## रियल एस्टेट की बादशाहत पर अदाणी परिवार का कब्जा, दशकों पुराना डीएलएफ का वर्चस्व टूटा

नई दिल्ली। भारतीय रियल एस्टेट जगत में वर्षों से कायम सत्ता संतुलन अब बदल गया है। लंबे समय तक देश के सबसे बड़े रियल एस्टेट कारोबारी परिवार के रूप में पहचान रखने वाले डीएलएफ के राजीव सिंह को पीछे छोड़ते हुए गौतम अदाणी और उनका परिवार पहली बार इस क्षेत्र के सबसे समृद्ध कारोबारी परिवार के रूप में उभरा है। GROHE-Hurun India Real Estate 150 List 2026 में अदाणी परिवार को शीर्ष स्थान मिलने के साथ ही यह स्पष्ट संकेत मिला है कि देश का रियल एस्टेट सेक्टर अब केवल पारंपरिक बिल्डरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बड़े कॉर्पोरेट समूह भी इस क्षेत्र में तेजी से अपना प्रभाव बढ़ा रहे हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर, शहरी विकास, टाउनशिप, लॉजिस्टिक्स और प्रीमियम कमर्शियल प्रोजेक्ट्स के दम पर अदाणी समूह ने ऐसी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है कि उसने वर्षों से नंबर-एक बने डीएलएफ समूह को भी पीछे छोड़ दिया। रिपोर्ट के अनुसार अदाणी परिवार की रियल एस्टेट से जुड़ी अनुमानित संपत्ति करीब 90,400 करोड़ रुपये आंकी गई है। सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पिछले एक वर्ष में उनकी रियल एस्टेट संपत्ति में करीब 73 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है। यह बढ़ोतरी न केवल समूह की आक्रामक कारोबारी रणनीति को दर्शाती है, बल्कि भारतीय रियल एस्टेट बाजार में उसके तेजी से बढ़ते प्रभाव का भी संकेत देती है। विशेषज्ञों का मानना है कि इतने कम समय में इस स्तर की वृद्धि किसी भी बड़े रियल एस्टेट समूह के लिए असाधारण उपलब्धि मानी जाती है।

अहमदाबाद स्थित अदाणी प्रॉपर्टीज आज देश की सबसे मूल्यवान गैर-सूचीबद्ध रियल एस्टेट कंपनियों में गिनी जाती है। कंपनी आवासीय परियोजनाओं के साथ-साथ बड़े कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, आधुनिक टाउनशिप, मिश्रित उपयोग (मिक्स्ड-यूज) विकास, बिजनेस पार्क और शहरी बुनियादी ढांचे से जुड़े कई महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट्स पर तेजी से काम कर रही है। समूह ने अपने इंफ्रास्ट्रक्चर अनुभव का लाभ उठाते हुए रियल एस्टेट कारोबार को केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे स्मार्ट शहरी विकास, कनेक्टिविटी और आधुनिक सुविधाओं से जोड़कर एक व्यापक व्यवसाय मॉडल में बदल दिया है। वहीं, लंबे समय तक देश के रियल एस्टेट सेक्टर में नंबर-एक स्थान पर बने रहने वाले डीएलएफ के चेयरमैन राजीव सिंह और उनका परिवार इस वर्ष दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक उनकी अनुमानित संपत्ति करीब 90,200 करोड़ रुपये रही, जो अदाणी परिवार से मामूली अंतर से कम है। हालांकि सबसे बड़ा झटका उनकी संपत्ति में आई करीब 29 प्रतिशत की गिरावट रही। विशेषज्ञों का मानना है कि शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव, बाजार मूल्यांकन में बदलाव और रियल एस्टेट सेक्टर की बदलती परिस्थितियों का असर डीएलएफ के मूल्यांकन पर दिखाई दिया है। देश की प्रमुख रियल एस्टेट कंपनियों में शामिल लोढ़ा डेवलपर्स ने भी अपनी मजबूत स्थिति बरकरार रखी है। कंपनी के चेयरमैन मंगल प्रभात लोढ़ा और उनका परिवार लगभग 67,700 करोड़ रुपये की अनुमानित संपत्ति के साथ सूची में तीसरे स्थान पर हैं।

## न्यायमूर्ति आनंद नारायण मुल्ला की 1961 में पुलिस पर की गई ऐतिहासिक टिप्पणी आज भी इतनी प्रासंगिक क्यों है?



**(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।** आज विवादों में घिरी पुलिस को लेकर जनता के मन में एक अलग ही तरह का भय पैदा हो गया है। ठीक 65 साल पहले, 1961 में, एक ऐसे मामले में जहां भारतीय पुलिस ने असंवैधानिक, गैरकानूनी या असभ्य व्यवहार किया था, प्रसिद्ध कवि और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश आनंद नारायण मुल्ला ने मोहम्मद नईम बनाम सरकार के मामले में भारतीय पुलिस व्यवस्था पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखी थी। जिसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। पत्रकार अरुण कुमार त्रिपाठी द्वारा उत्तर प्रदेश, बिहार और पंजाब में पुलिस दमन और कानूनी व्यवहार का विश्लेषण अवश्य पढ़ा जाना चाहिए, जबकि न्यायमूर्ति आनंद नारायण मुल्ला की ऐतिहासिक चेतावनी आज भी प्रासंगिक है।

इस संदर्भ में, पूर्व उच्च न्यायालय न्यायाधीश आनंद नारायण मुल्ला लिखते हैं कि "पूरे देश में ऐसा कोई भी गैरकानूनी समूह नहीं है जिसका आपराधिक रिकॉर्ड उस संगठित बल के करीब भी आता हो जिसे हम भारतीय पुलिस बल कहते हैं।" उन्होंने आगे कहा, "अगर मुझे विश्वास होता कि मैं अपने प्रयासों से पुलिस बल की इस गंदगी को साफ कर सकता हूँ, तो मैं अपना संघर्ष जारी रखने से नहीं डरता।" लेकिन इस आदेश के बाद, न्यायाधीश ने टिप्पणी की, "अगर मैं अक्सर पुलिस अधिकारियों के खिलाफ टिप्पणी करता हूँ, तो मुझे नहीं पता कि ये टिप्पणियाँ इतना ध्यान क्यों आकर्षित करती हैं? इससे यह भी पता चलता है कि मेरी टिप्पणियों के आधार पर कोई सुधार नहीं हो रहा है। आज, 65 साल बाद, ऐसा लगता है कि भारतीय पुलिस की स्थिति और भी चिंताजनक हो गई है। या यूँ कहें कि समाज और भी अधिक असंवेदनशील हो गया है। एक बयान की बात छोड़िए, पुलिस के व्यवहार के सैकड़ों वीडियो पोस्ट किए जाते हैं और वायरल हो जाते हैं, फिर भी पुलिस के चरित्र में कोई सुधार दिखाई नहीं देता।"

## सूरत में बाढ़ के बाद त्वचा रोगों के मामले बढ़े, 18 चिकित्सा शिविरों में 4 हजार से अधिक लोगों की जांच की गई



**(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।** सूरत के लोग भारी बारिश और बाढ़ की गंभीर स्थिति से अभी उबर ही रहे थे कि सूरत की विभिन्न नदियों में अवैध निर्माणों के कारण उन्हें स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं सताने लगीं। बाढ़ का पानी उतरने के बाद, गंदगी, कीचड़ और दूषित पानी के लंबे समय तक संपर्क में रहने से त्वचा रोगों के मामलों में काफी वृद्धि हुई है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नगरपालिका द्वारा शुरू किए गए स्वास्थ्य शिविरों में अब तक इलाज के लिए आए मरीजों में त्वचा रोग के मरीजों की संख्या सबसे अधिक दर्ज की गई है। बाढ़ की स्थिति सामान्य होने के बाद, नगरपालिका ने प्रभावित क्षेत्रों में बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता दी है। इसके अलावा, 11 जुलाई से शहर के प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर शुरू किए गए हैं ताकि नागरिकों को अस्पताल जाने की आवश्यकता न पड़े और उन्हें मौके पर ही तत्काल उपचार मिल सके।

इस संबंध में, नगरपालिका ने अथवा जोन में एक, उधना जोन-ए में पांच, वराछा जोन-ए में तीन, सारथाना जोन में दो और लिंबायत जोन में चार सहित कुल 18 स्थानों पर चिकित्सा शिविर स्थापित किए हैं। इन शिविरों में चिकित्सा अधिकारियों, त्वचा विशेषज्ञों, प्रयोगशाला तकनीशियनों और अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की एक टीम नागरिकों की जांच कर रही है और उन्हें आवश्यक दवाएं उपलब्ध करा रही है।

11 जुलाई से रविवार दोपहर तक लगभग 4000 नागरिकों की स्वास्थ्य जांच की गई। इनमें से 825 मरीजों का त्वचा रोगों का इलाज किया गया। बाढ़ के बाद स्वास्थ्य के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। इसके अलावा, 357 लोगों को बुखार, 264 लोगों को साधारण दस्त और 82 लोगों को दस्त-उल्टी की शिकायत थी।

नगरपालिका के अधिकारियों के अनुसार, मौजूदा स्थिति में त्वचा संक्रमण, बुखार और जलजनित रोगों को ध्यान में रखते हुए निरंतर स्वास्थ्य निगरानी की जा रही है। इस संबंध में शुरू किए गए सभी चिकित्सा शिविर अगले शनिवार तक चालू रहेंगे।

### अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा

## उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने रथयात्रा के पूरे रूट का निरीक्षण किया और सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की

**उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी**

- 16.2 किमी लंबे परंपरागत रथयात्रा रूट पर 3 मुख्य रथों के साथ 18 गजराज, 103 ट्रक और 30 अखाड़े शामिल होंगे
- सुरक्षा की दृष्टि से पूरे रूट को 26 रेंज और 1397 पॉइंट्स में बांटा गया, 10 आईजी और डीआईजी सहित 30,000 से अधिक पुलिस जवान तैनात
- स्मार्ट पुलिसिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और 3डी मैपिंग जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी का होगा उपयोग
- 100 से अधिक ड्रोन, गजराज पर जीपीएस-सीसीटीवी, संदिग्धों के लिए 'एआई फेस रिकॉग्निशन कैमरे' और सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी के लिए '3डी मैपिंग और बॉडी वॉर्न कैमरा' जैसे इंतजाम सुनिश्चित किए गए



गांधीनगर : अहमदाबाद शहर में आषाढ़ मास की द्वितीया तिथि के पावन पर्व पर निकलने वाली भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं भव्य रथयात्रा को लेकर नागरिकों में अद्भुत उत्साह और भक्तिमय माहौल देखने को मिल रहा है।

राज्य के उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने मंगलवार को रथयात्रा के समग्र रूट का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया और सुरक्षा इंतजामों की व्यापक समीक्षा की ताकि यह ऐतिहासिक रथयात्रा सुरक्षित और शांतिपूर्ण ढंग से सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हो।

उप मुख्यमंत्री ने राज्य पुलिस प्रमुख श्री जी.एस. मलिक और शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत सहित उच्च अधिकारियों के साथ सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री ने रूट के संवेदनशील पॉइंट्स, कानून व्यवस्था की स्थिति और आपातकालीन सेवाओं के अग्रिम आयोजन को लेकर अधिकारियों के साथ चर्चा की।

रथयात्रा रूट के निरीक्षण के दौरान पत्रकारों से बात करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा 16.2 किलोमीटर के परंपरागत रूट पर भ्रमण करेगी, जिसमें 3 मुख्य रथों के साथ 18 गजराज, 103 ट्रक, 30 अखाड़े और कई भजन मंडलियां शामिल होंगी।

सुरक्षा इंतजामों के बारे में बात करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रथयात्रा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद बनाए रखने के लिए पूरे रूट को 26 रेंज, 53 एरिया और 1397 पॉइंट्स में बांटा गया है। समग्र रूप पर 10 आईजी और डीआईजी, 42 डीसीपी और 88 एसीपी अधिकारियों सहित 30,000 से अधिक पुलिस जवानों, 15 एसआरपीएफ और 9 सेंट्रल पैरामिलिट्री फोर्स की कंपनियां तैनात की गई हैं।

रथयात्रा में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल की जानकारी देते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष रथयात्रा में सुरक्षा व्यवस्था को फुलप्रूफ बनाने के लिए स्मार्ट पुलिसिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और निगरानी तथा 3डी मैपिंग जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है।

उन्होंने बताया कि 100 से अधिक ड्रोन के जरिए लाइव सर्विलांस, हाथियों की देखरेख के लिए जीपीएस, सीसीटीवी और डेसिबल मीटर, बॉडी-वॉर्न कैमरे, हाईटेक वायरलेस सिस्टम, एआई वॉयस बॉट, एंटी-ड्रोन गन और संदिग्ध तत्वों एवं अपराधियों को पकड़ने के लिए 'एआई फेस रिकॉग्निशन कैमरे' जैसी टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है।

उप मुख्यमंत्री ने बताया कि कानून व्यवस्था के साथ ही पुलिस ने पिछले एक महीने के दौरान सभी समाजों के साथ बैठकों और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों का आयोजन करके भाईचारे का एक अद्भुत माहौल बनाया है, इसके लिए उन्होंने पुलिस विभाग और सभी नागरिकों को बधाई दी। उप मुख्यमंत्री ने रूट निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान स्थानीय स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरित किए और उनका हौसला बढ़ाया।

उप मुख्यमंत्री ने नागरिकों से अपील की कि वे बिना किसी धक्का-मुक्की के भगवान के दर्शन करें और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रूट की जर्जर और खतरनाक इमारतों पर चढ़ने से बचें।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद शहर पुलिस के निष्ठापूर्वक कार्यों और पूर्व तैयारियों की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि टेक्नोलॉजी और मानवबल के उत्कृष्ट तालमेल से यह पर्व पूरी आस्था और उत्साहपूर्ण माहौल में निर्विघ्न रूप से संपन्न होगा।

रथयात्रा रूट निरीक्षण में अहमदाबाद के महापौर श्री हितेशभाई बारोट, सांसद श्री दिनेशभाई मकवाणा, विधायक श्री कौशिक जैन, शहर अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री कमलेशभाई पटेल और अहमदाबाद महानगर पालिका के कई पदाधिकारी, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणी सहित पुलिस विभाग के उच्च अधिकारी एवं सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी मौजूद रहे।

# छह दशक बाद गिर के जंगलों में फिर से गूंज रही है 'इंडियन ग्रे हॉर्नबिल' पक्षियों की चहचहाहट : राज्य सरकार के री-इंट्रोडक्शन प्रोजेक्ट को मिली सफलता

**▸▸ 2021 में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षी को अरावली के जंगलों से लाकर दोबारा गिर के जंगलों में बसाया गया, चरणबद्ध तरीके से कुल 40 पक्षियों को गिर के जंगलों में छोड़ा गया**

**▸▸ हाल में हुए एक अध्ययन में पता चला कि इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षियों ने अब गिर के जंगलों को अपना स्थायी बसेरा बना लिया है, घोंसले बना रहे हैं और प्रजनन भी कर रहे हैं**

**▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत में वन्यजीव संरक्षण का एक नया अध्याय शुरू हुआ, लुप्त हो चुके चीता और गोडावण जैसे अनेक पशु-पक्षियों को फिर से जंगलों में छोड़ा जा रहा है**

गांधीनगर : गुजरात वन विभाग को गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) पक्षी के संरक्षण को लेकर कुछ दिनों पहले ही एक बड़ी सफलता मिली है। जिसमें 'जंप-स्टार्ट' तकनीक के जरिए जन्मे गोडावण पक्षी के दूसरे चूजे ने जन्म के बाद नाजुक और अहम माने जाने वाले 40 दिनों तक जीवित रहने के महत्वपूर्ण पड़ाव को पार कर लिया है। इसे एक अहम उपलब्धि माना जा रहा है। इसी समय, गुजरात वन्यजीव संरक्षण की सफलता से जुड़ी एक दूसरी बड़ी खबर आई है।

गुजरात के गिर जंगल से छह दशक पहले विलुप्त हो चुके इंडियन ग्रे हॉर्नबिल (आईजीएच-भारतीय धूसर धनेश) पक्षी को फिर से यहां बसाने की कोशिशों को सफलता मिली है।

छह दशक पहले गिर के जंगल से विलुप्त हो चुके इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षी को फिर से वर्ष 2021 में अरावली के जंगलों से लाकर गिर में छोड़ा गया था। राज्य सरकार के इस 'इंडियन ग्रे हॉर्नबिल री-इंट्रोडक्शन' नामक प्रोजेक्ट को सफलता मिली है। क्योंकि, इन पक्षियों ने अब गिर के जंगल को अपना स्थायी बसेरा बना लिया है। इतना ही नहीं, ये यहां घोंसले भी बनाते हैं और प्रजनन भी करते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत में वन्यजीव संरक्षण का एक नया अध्याय शुरू हुआ है। लुप्त हो चुके चीता और गोडावण जैसे अनेक जानवरों और पक्षियों को फिर से जंगलों में छोड़ा जा रहा है और उनकी वैज्ञानिक तरीके से निगरानी करते हुए संरक्षण सुनिश्चित किया जा रहा है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा, "मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात में वन विभाग द्वारा वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आयाम गढ़े जा रहे हैं। विलुप्त होने के कगार पर पहुंचे चुके गोडावण पक्षी से लेकर इंडियन ग्रे हॉर्नबिल के री-इंट्रोडक्शन प्रोजेक्ट को मिली सफलता इसकी शानदार मिसाल है। वर्ष 2021 में गिर जंगल में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षी को फिर से बसाया गया था। इस घटना को पांच वर्ष बीत चुके हैं। अब ये पक्षी अपने नए प्राकृतिक आवास के माहौल में ढल चुके हैं और प्रजनन भी कर रहे हैं, जो इस प्रोजेक्ट की सफलता को दर्शाता है। 1950 और 1960 के दशक में गिर के जंगल से गायब हो चुके इन पक्षियों को फिर से यहां वापस लाने के प्रोजेक्ट की सफलता एक ऐतिहासिक घटना है।"

गुजरात के वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीण माली ने कहा, "गुजरात के वन्यजीव संरक्षण के मॉडल ने दुनिया को बताया है कि कैसे अपनी प्राकृतिक विरासत को बचाया और सुरक्षित रखा जाए। राज्य सरकार के वन्यजीव संरक्षण के विशेष प्रयासों को मिली सफलता पर पूरे देश को गर्व है।"

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय पीयर-रिव्यूड जर्नल 'बड्र्स' में 'रीइंट्रोडक्शन ऑफ इंडियन ग्रे हॉर्नबिल्स इन गिर, इंडिया : इनसाइट्स इन टू रेंजिंग, हैबिटेट यूज, नेस्टिंग एंड बिहेवियरल पैटर्न' शीर्षक से एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ है। इस शोध पत्र में गुजरात वन विभाग और उनसे जुड़ी संस्थाओं के द्वारा गिर में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षी को वापस लाने के प्रयासों का पहली बार व्यापक आकलन पेश किया गया है।

### पारिस्थितिकी तंत्र में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल का अहम योगदान

गुजरात के वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव ने कहा, "इंडियन ग्रे हॉर्नबिल (आईजीएच) पक्षी को गिर के जंगल में छोड़ने के बाद, पहले वर्ष में एक जोड़े ने सफलतापूर्वक प्रजनन किया, जबकि दूसरे वर्ष में तीन और प्रजनन करने वाले जोड़ों ने घोंसले बनाए। यह दिखाता है कि इन पक्षियों ने गिर को फिर से अपना घर बना लिया है। ये पक्षी वृक्षों के बीज को लंबी दूरी तक फैलाने में माहिर होते हैं। उनका यह व्यवहार पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। ये पक्षी फलदार पेड़ों के बीजों को दूर-दूर तक पहुंचाकर जंगलों के प्राकृतिक पुनर्जीवन में मददगार साबित होते हैं।"

### गिर के जंगलों में 40 इंडियन ग्रे हॉर्नबिल छोड़े गए थे

जूनागढ़ वन सर्कल के वन संरक्षक और इस अध्ययन के सह-लेखक श्री मोहन राम ने कहा, "इस प्रोजेक्ट के तहत दो चरणों में 40 इंडियन ग्रे हॉर्नबिल को गिर के जंगलों में छोड़ा गया। वर्ष 2021 और 2022 के दौरान 28 पक्षी छोड़े गए। इसके बाद वर्ष 2023 में 12 और पक्षी छोड़े गए। छोड़े गए पक्षियों में से 11 नर पक्षियों में सैटेलाइट टांसमीटर लगाए गए, जिससे वैज्ञानिक कई वर्षों तक उनकी गतिविधियों, उनके रहने की जगहों और प्रजनन व्यवहार पर नजर रख सके।"

श्री मोहन राम ने आगे कहा, "गुजरात के अरावली के जंगलों में बसे इंडियन ग्रे हॉर्नबिल को लाकर गिर में फिर से बसाया गया। गिर के जंगलों का अध्ययन करने पर विशेषज्ञों को महसूस हुआ कि अब गिर में परिस्थितियां इंडियन ग्रे हॉर्नबिल पक्षी के लिए काफी अनुकूल हैं।"

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) और चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन डॉ. जयपाल सिंह ने कहा, "ग्रे हॉर्नबिल दशकों पहले गिर से गायब हो गए थे, लेकिन 1965 में गिर वन्यजीव अभयारण्य और 1975 में गिर राष्ट्रीय उद्यान घोषित होने के बाद उनके प्राकृतिक आवास की सुरक्षा में हुए सुधारों ने इस प्रजाति को वापस लाने के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाई।"

### अब गिर को स्थायी बसेरा बना चुके हैं इंडियन ग्रे हॉर्नबिल

सैटेलाइट ट्रैकिंग से पता चला कि नए छोड़े गए इंडियन ग्रे हॉर्नबिल ने शुरुआत में अनजान माहौल की खोज करते समय व्यापक भ्रमण किया था और उसके बाद वे अपेक्षाकृत छोटे इलाकों में बस गए। छोड़े जाने के बाद पहले कुछ महीनों के दौरान इन पक्षियों का विचरण क्षेत्र औसतन 61 वर्ग किलोमीटर था। बाद में, इस क्षेत्र से परिचित होने पर यह घटकर लगभग 5.7 वर्ग किलोमीटर रह गया।

इसी प्रकार, शुरुआती खोजबीन के दौरान उनकी औसत दैनिक उड़ान का दायरा 4.3 किलोमीटर था, जो स्थायी होने के बाद घटकर 1.4 किलोमीटर रह गया, जो गिर के इकोसिस्टम के साथ इनके सफल अनुकूलन को दिखाता है।

# रसोई की लाल दाल में छिपा है प्राकृतिक सौंदर्य का राज बिना महंगे कॉस्मेटिक्स के पाएं दमकती त्वचा-शहनाज़ हुसैन

बरसात का मौसम अपने साथ हरियाली और ठंडक तो लेकर आता है, लेकिन यही मौसम त्वचा के लिए कई तरह की परेशानियां भी खड़ी कर देता है। हवा में बढ़ी नमी, उमस, पसीना, धूल और प्रदूषण के कारण त्वचा अपनी प्राकृतिक चमक खोने लगती है। किसी की त्वचा रूखी हो जाती है तो किसी को चिपचिपाहट, मुंहासे, दाग-धब्बे और एलर्जी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में अधिकांश लोग महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स, केमिकल युक्त क्रीम और बार-बार ब्यूटी पार्लर का सहारा लेते हैं। इन पर हजारों रुपये खर्च करने के बाद भी कई बार मनचाहा परिणाम नहीं मिलता, बल्कि संवेदनशील त्वचा पर इनके दुष्प्रभाव भी देखने को मिल जाते हैं। जबकि प्रकृति ने हमारी रसोई में ही ऐसे कई खजाने छिपा रखे हैं, जो बिना किसी दुष्प्रभाव के त्वचा को स्वस्थ, मुलायम और चमकदार बनाने में मदद करते हैं। इन्हीं प्राकृतिक सौंदर्यवर्धक सामग्रियों में लाल मसूर की दाल का विशेष स्थान है।

लाल मसूर की दाल केवल स्वादिष्ट भोजन का हिस्सा ही नहीं है, बल्कि यह त्वचा की देखभाल के लिए भी एक अत्यंत प्रभावी प्राकृतिक उपाय मानी जाती है। आयुर्वेद और पारंपरिक घरेलू उपचारों में सदियों से मसूर दाल का उपयोग सौंदर्य निखारने के लिए किया जाता रहा है। इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन, विटामिन, आयरन, जिंक, मैग्नीशियम, फोलिक एसिड तथा अनेक प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। ये सभी पोषक तत्व त्वचा की गहराई तक पहुंचकर उसे पोषण देते हैं, नई कोशिकाओं के निर्माण में सहायता करते हैं और त्वचा की प्राकृतिक सुरक्षा परत को मजबूत बनाते हैं। नियमित रूप से मसूर दाल का फेस पैक लगाने से त्वचा की रंगत में सुधार आता है, मृत कोशिकाएं हटती हैं और चेहरा स्वाभाविक रूप से दमकने लगता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि लाल मसूर दाल एक प्राकृतिक एक्सफोलिएटर का काम करती है। इसके महीन कण त्वचा पर जमा गंदगी, अतिरिक्त तेल और मृत कोशिकाओं को हटाकर रोमछिद्रों की सफाई करते हैं। इससे त्वचा खुलकर सांस लेती है और चेहरे पर ताजगी बनी रहती है। यही कारण है कि जिन लोगों की त्वचा बेजान, मुरझाई हुई या असमान रंगत वाली होती है, उनके लिए मसूर दाल का प्रयोग बेहद लाभकारी माना जाता है। यदि घर पर एक प्रभावी फेस पैक तैयार करना हो तो दो चम्मच लाल मसूर दाल को आधे घंटे के लिए दूध में भिगो दें। जब दाल अच्छी तरह नरम हो जाए तो उसे उसी दूध के साथ पीसकर मुलायम पेस्ट बना लें। इसमें एक बड़ा चम्मच बेसन, एक चम्मच गुलाब की पंखुड़ियों का पाउडर, एक चम्मच मुल्तानी मिट्टी और आधा चम्मच कस्तूरी हल्दी मिलाकर अच्छी तरह मिश्रित करें। इस पैक को चेहरे, गर्दन और खुले हिस्सों पर समान रूप से लगाएं। लगभग 20 से 25 मिनट बाद जब यह स्वाभाविक रूप से सूखने लगे, तब सामान्य पानी से धो लें। सप्ताह में दो बार इसका उपयोग करने से त्वचा में उल्लेखनीय निखार दिखाई देने लगता है। यदि त्वचा अत्यधिक शुष्क है तो मसूर दाल को रातभर कच्चे दूध में भिगोकर रखें और सुबह उसे बारीक पीस लें। इस पेस्ट में थोड़ा-सा शहद और मलाई मिलाकर चेहरे पर लगाएं। यह मिश्रण त्वचा को गहराई से मॉइस्चराइज करता है और उसकी नमी बनाए रखने में मदद करता है। बरसात के मौसम में जब त्वचा बार-बार रूखी और खिंची हुई महसूस होती है, तब यह घरेलू उपाय काफी राहत देता है। तैलीय त्वचा वाले लोगों के लिए भी मसूर दाल किसी वरदान से कम नहीं है। मसूर दाल के पेस्ट में गुलाब जल और कुछ बूंदें नींबू का रस मिलाकर लगाने से अतिरिक्त तेल नियंत्रित होता है। इससे मुंहासे कम होने लगते हैं और त्वचा अधिक साफ एवं संतुलित दिखाई देती है। जिन लोगों को बार-बार पिंपल्स की समस्या रहती है, उनके लिए यह पैक विशेष रूप से लाभदायक माना जाता है।

मसूर दाल के एंटी-बैक्टीरियल और एंटीऑक्सीडेंट गुण त्वचा को संक्रमण से बचाने में भी सहायक होते हैं। यह धूल, धुएं और प्रदूषण से होने वाले नुकसान को कम करता है। नियमित उपयोग से चेहरे पर मौजूद हल्के दाग-धब्बे, टैनिंग और झाइयों में भी धीरे-धीरे सुधार दिखाई देता है। यही वजह है कि कई प्राकृतिक सौंदर्य उपचारों में मसूर दाल को प्रमुख सामग्री के रूप में शामिल किया जाता है।

त्वचा की मालिश के लिए भी मसूर दाल का उपयोग किया जा सकता है। जब फेस पैक लगभग 70 से 75 प्रतिशत सूख जाए, तब हाथों में थोड़ा गुलाब जल लगाकर हल्के हाथों से गोलाकार गति में चेहरे की मालिश करें। इससे रक्त संचार बेहतर होता है, त्वचा में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ती है और चेहरे पर प्राकृतिक गुलाबी आभा दिखाई देने लगती है। इसके बाद ताजे पानी से चेहरा धोकर हल्का मॉइस्चराइजर लगा लें, जिससे त्वचा लंबे समय तक मुलायम बनी रहे।

संवेदनशील त्वचा वाले लोगों को किसी भी घरेलू फेस पैक का उपयोग करने से पहले पैच टेस्ट अवश्य करना चाहिए। यदि त्वचा पर किसी प्रकार की जलन, लालिमा या खुजली महसूस हो तो उसका उपयोग रोक देना चाहिए। इसके अलावा मसूर दाल का फेस पैक सप्ताह में दो या अधिकतम तीन बार ही लगाना उचित माना जाता है। अत्यधिक उपयोग करने से त्वचा रूखी हो सकती है।

सौंदर्य विशेषज्ञों का मानना है कि बाहरी देखभाल के साथ-साथ संतुलित आहार, पर्याप्त पानी, भरपूर नींद और तनावमुक्त जीवनशैली भी त्वचा की सुंदरता बनाए रखने के लिए उतनी ही आवश्यक है। यदि प्राकृतिक उपचारों को नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए तो बिना महंगे कॉस्मेटिक्स और रासायनिक उत्पादों के भी स्वस्थ, कोमल और दमकती त्वचा प्राप्त की जा सकती है।

आज जब बाजार में सौंदर्य उत्पादों की लंबी श्रृंखला मौजूद है, तब भी प्राकृतिक उपायों का महत्व कम नहीं हुआ है। लाल मसूर की साधारण-सी दाल यह साबित करती है कि खूबसूरती केवल महंगे प्रसाधनों से नहीं, बल्कि प्रकृति की सरल और पोषक देन से भी हासिल की जा सकती है। यदि सही तरीके से और नियमित रूप से इसका उपयोग किया जाए तो यह त्वचा को प्राकृतिक चमक देने के साथ-साथ लंबे समय तक स्वस्थ बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही कारण है कि सौंदर्य विशेषज्ञ वर्षों से इस घरेलू नुस्खे को सुरक्षित, किफायती और प्रभावी विकल्प के रूप में अपनाने की सलाह देते रहे हैं।

# होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के विट्ठलपुर प्लांट का डीआरएम वेद प्रकाश ने किया दौरा

## रेल मार्ग से दोपहिया वाहनों के परिवहन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल; रेलवे अधिकारियों एवं होंडा प्रबंधन के साथ हुई उच्चस्तरीय बैठक

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) श्री वेद प्रकाश ने 14 जुलाई, 2026 को गुजरात के विट्ठलपुर स्थित होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) के प्लांट का दौरा किया। इस अवसर पर रेलवे अधिकारियों एवं होंडा प्रबंधन के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें होंडा के स्कूटर एवं अन्य दोपहिया वाहनों का रेल मार्ग से परिवहन प्रारंभ करने की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक के दौरान बताया गया कि विट्ठलपुर स्थित होंडा प्लांट में प्रतिदिन 7,500 से अधिक स्कूटरों का उत्पादन होता है, जिन्हें वर्तमान में ट्रकों के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों में भेजा जाता है। अब भारतीय रेलवे के माध्यम से इन दोपहिया वाहनों का परिवहन शुरू करने की दिशा में दोनों पक्षों के बीच सकारात्मक विचार-विमर्श हुआ। चर्चा के दौरान रेल परिवहन के लिए आवश्यक परिचालन व्यवस्था, लोडिंग एवं अनलोडिंग सुविधाओं, लॉजिस्टिक्स, रेक उपलब्धता तथा विभिन्न समन्वयात्मक पहलुओं पर विस्तार से विचार किया गया। रेल आधारित परिवहन शुरू होने से सड़क परिवहन पर निर्भरता कम होगी, परिवहन लागत में कमी आएगी, समयबद्ध एवं सुरक्षित आपूर्ति सुनिश्चित होगी तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

डीआरएम श्री वेद प्रकाश ने कहा कि भारतीय रेलवे उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप आधुनिक एवं विश्वसनीय माल परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पहल रेलवे एवं ऑटोमोबाइल उद्योग के बीच सहयोग को नई दिशा प्रदान करेगी तथा रेल आधारित लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

प्रस्तावित व्यवस्था लागू होने के बाद अहमदाबाद मंडल के माल परिवहन (फ्रेट) राजस्व में भी उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। साथ ही, यह पहल भारतीय रेलवे के "ग्रीन लॉजिस्टिक्स" एवं "मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट" को बढ़ावा देने के उद्देश्य को भी सशक्त करेगी।

अहमदाबाद मंडल क्षेत्र के उद्योगों को रेल नेटवर्क से जोड़ने, माल ढुलाई को अधिक सुरक्षित, किफायती एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाने तथा उद्योगों के लिए बेहतर लॉजिस्टिक समाधान उपलब्ध कराने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

# किशाऊ परियोजना से हिमाचल की अर्थव्यवस्था को नई ताकत, मोदी की मौजूदगी में जल्द होगा ऐतिहासिक एमओयू; बिना निवेश हर साल मिलेंगे 600 करोड़ रुपये

शिमला। हिमाचल प्रदेश के जल संसाधनों को आर्थिक समृद्धि में बदलने की दिशा में राज्य सरकार को बड़ी सफलता मिलती दिखाई दे रही है। लंबे समय से चर्चा और विभिन्न स्तरों पर चली बातचीत के बाद अब 422 मेगावाट क्षमता वाली किशाऊ बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना को लेकर केंद्र सरकार, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बीच जल्द ही समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर होने की संभावना है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने संकेत दिए हैं कि यह महत्वपूर्ण समझौता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में संपन्न हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो यह केवल एक ऊर्जा परियोजना नहीं, बल्कि हिमाचल प्रदेश की आर्थिक मजबूती, जल अधिकारों की सुरक्षा और भविष्य के ऊर्जा विकास का नया अध्याय साबित होगा।

मुख्यमंत्री सुक्खू ने शिमला में आयोजित एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक के बाद बताया कि केंद्र सरकार ने एमओयू का मसौदा दोनों राज्यों को भेज दिया है और उनसे सुझाव भी मांगे हैं। राज्य सरकार ने अपने हितों से जुड़े सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हिमाचल सरकार ने पहले के मसौदे को स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि उसमें प्रदेश के हितों का पर्याप्त संरक्षण नहीं था। राज्य सरकार ने कई संशोधन सुझाए, जिन्हें नए मसौदे में शामिल किए जाने के बाद ही सहमति बनी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नए समझौते की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हिमाचल प्रदेश को इस परियोजना में किसी प्रकार का पूंजी निवेश नहीं करना पड़ेगा, जबकि इसके बावजूद राज्य को हर वर्ष करीब 600 करोड़ रुपये की आय प्राप्त होगी। उनका कहना था कि यह व्यवस्था हिमाचल के लिए अत्यंत लाभकारी है, क्योंकि बिना वित्तीय बोझ उठाए राज्य को स्थायी राजस्व प्राप्त होगा, जिससे विकास कार्यों को नई गति मिलेगी।

उन्होंने कहा कि यह परियोजना केवल बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे सिंचाई, पेयजल, बाढ़ नियंत्रण और क्षेत्रीय विकास को भी दीर्घकालिक लाभ मिलेगा। परियोजना के माध्यम से यमुना बेसिन के जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन किया जाएगा, जिससे दोनों राज्यों को भविष्य में जल उपलब्धता और ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण लाभ मिलने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री सुक्खू ने विशेष रूप से बताया कि नए समझौते में हिमाचल प्रदेश के बिजली और जल दोनों पर वैध अधिकारों को स्पष्ट रूप से सुरक्षित किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश को परियोजना से उत्पन्न बिजली में उसका निर्धारित हिस्सा मिलेगा, साथ ही यमुना बेसिन के 378 मिलियन घन मीटर पानी पर राज्य के अधिकार को भी औपचारिक रूप से मान्यता दी गई है। यह प्रावधान भविष्य में जल संसाधनों से जुड़े किसी भी विवाद की संभावना को कम करेगा और राज्य के दीर्घकालिक हितों की रक्षा करेगा।

उन्होंने कहा कि हिमाचल सरकार प्राकृतिक संसाधनों पर प्रदेश के अधिकारों को लेकर पूरी तरह गंभीर है। राज्य की जलविद्युत क्षमता हिमाचल की सबसे बड़ी प्राकृतिक संपदा है और सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि इन संसाधनों का अधिकतम लाभ प्रदेश की जनता को मिले। इसी नीति के तहत सभी बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं के समझौतों की समीक्षा की जा रही है, ताकि भविष्य में राज्य को अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके।

मुख्यमंत्री ने बैठक के दौरान भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) से जुड़े लंबित मामलों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश का 13,066 मिलियन यूनिट बिजली का बकाया अभी तक लंबित है और सरकार इसे प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस विषय को केंद्र सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाया जाए, ताकि प्रदेश को उसका वैध अधिकार शीघ्र मिल सके।

विशेषज्ञों का मानना है कि किशाऊ परियोजना उत्तर भारत की महत्वपूर्ण बहुउद्देशीय परियोजनाओं में शामिल है। यह परियोजना केवल बिजली उत्पादन का माध्यम नहीं होगी, बल्कि यमुना नदी बेसिन के समग्र जल प्रबंधन, सिंचाई विस्तार, बाढ़ नियंत्रण और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसके पूरा होने के बाद क्षेत्र में ऊर्जा उत्पादन बढ़ेगा, उद्योगों को बिजली उपलब्ध होगी और आसपास के क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को भी गति मिलेगी। ऊर्जा विशेषज्ञों के अनुसार भारत तेजी से स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है और जलविद्युत परियोजनाएं इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार बन रही हैं। हिमालयी राज्यों की विशाल जलविद्युत क्षमता देश की ऊर्जा सुरक्षा में अहम भूमिका निभा सकती है। ऐसे में किशाऊ जैसी परियोजनाएं राष्ट्रीय ऊर्जा नीति के लिए भी रणनीतिक महत्व रखती हैं।

राजनीतिक दृष्टि से भी इस परियोजना को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में केंद्र सरकार तथा दोनों राज्यों के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर होते हैं, तो इसे सहकारी संघवाद (कोऑपरेटिव फेडरलिज्म) का मजबूत उदाहरण माना जाएगा। इससे केंद्र और राज्यों के बीच विकास परियोजनाओं को लेकर बेहतर समन्वय का संदेश भी जाएगा।

हिमाचल प्रदेश सरकार का कहना है कि वह राज्य के प्राकृतिक संसाधनों पर प्रदेश के अधिकारों से कोई समझौता नहीं करेगी। मुख्यमंत्री सुक्खू ने दोहराया कि सरकार का लक्ष्य केवल परियोजनाओं को मंजूरी दिलाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि उनसे राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत हो, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ें और आने वाली पीढ़ियों को प्राकृतिक संसाधनों का उचित लाभ मिल सके। यदि प्रस्तावित समझौता तय समय पर लागू हो जाता है, तो किशाऊ बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना हिमाचल प्रदेश के लिए केवल एक ऊर्जा परियोजना नहीं, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता, जल अधिकारों की सुरक्षा और सतत विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में दर्ज होगी।

**अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा**

# उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी जगन्नाथ मंदिर में नेत्रोत्सव विधि और महाआरती में सहभागी हुए

**▸▸ उप मुख्यमंत्री ने ध्वजारोहण करके भगवान जगन्नाथ जी के समक्ष राज्य के नागरिकों की खुशहाली के लिए प्रार्थना की**

**▸▸ ऊर्जा एवं जिला प्रभारी मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति**

गांधीनगर : अहमदाबाद शहर में भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा से पूर्व भगवान का स्वागत और उनका दर्शन करने के लिए भक्तों में अनोखा उत्साह देखने को मिल रहा है। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को निकलने वाली भगवान जगन्नाथ जी की भव्य रथयात्रा से पहले राज्य के उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी मंगलवार को जगन्नाथ मंदिर में नेत्रोत्सव विधि में उपस्थित रहे। इस अवसर पर ऊर्जा एवं जिला प्रभारी मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल भी मौजूद रहे।

उप मुख्यमंत्री के करकमलों से मंदिर में ध्वजारोहण संपन्न हुआ। ध्वजारोहण के बाद उप मुख्यमंत्री उपस्थित महानुभावों के साथ भगवान की महाआरती में सहभागी हुए। श्री हर्ष संघवी ने भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन करके आशीर्वाद लिया तथा राज्य के नागरिकों की खुशहाली के लिए प्रार्थना की।

उल्लेखनीय है कि भगवान 15 दिनों के अनवसर काल के बाद स्वस्थ होकर निज मंदिर पधारते हैं। इस अवसर पर भगवान के तेजस्वी स्वरूप के 'नवयौवन दर्शन' के साथ गर्भगृह में प्रभु की आंखों पर रेशमी पट्टी बांधने की परंपरागत नेत्रोत्सव विधि उप मुख्यमंत्री की उपस्थिति में संपन्न हुई। जहां भक्तों को भव्य 'सोनावेश' (शृंगार) में भगवान के दर्शन का लाभ मिला।

अहमदाबाद सहित राज्य के अन्य जिलों में निकलने वाली भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्राएं करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र हैं। भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा शांतिपूर्ण तरीके से सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हो, इस उद्देश्य से गुजरात सरकार ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में मजबूत सुरक्षा व्यवस्था, आधुनिक टेक्नोलॉजी पर आधारित अनेक नई पहलों और सोशल पुलिसिंग के जरिए सभी आनुषंगिक तैयारियां सुनिश्चित की हैं।

जमालपुर स्थित जगन्नाथ जी मंदिर में ध्वजारोहण, नेत्रोत्सव विधि और महाआरती में शहर के महापौर श्री हितेशभाई बारोट, सांसद श्री दिनेशभाई मकवाणा, विधायकगण सर्वश्री अमितभाई शाह, कौशिकभाई जैन, दिनेशसिंह कुशवाह, अमूल भट्ट, हसमुखभाई पटेल, उप महापौर श्रीमती अंजूबेन शाह, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणी, पुलिस महानिदेशक श्री जी.एस. मलिक, शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत, शहर अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री कमलेशभाई पटेल सहित अहमदाबाद महानगर पालिका के पदाधिकारी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री नितिन पटेल, जगन्नाथ मंदिर के महंत श्री दिलीपदास जी महाराज, मंदिर के न्यासीगण और अग्रणियों सहित बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।